https://www.facebook.com/Kamal.Sandesh/ www.kamalsandesh.org @kamalsandeshbjp

कमल संदेश

विजय विशेषांक

'इस चुनाव ने दिलों को जोड़ने का काम किया'

वर्ष-14, अंक-12 16-30 जून, 2019 (पाक्षिक) ₹20

'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास'

विशेष साक्षात्कार : श्री रामलाल, भाजपा राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन)

राजघाट स्थित महात्मा गांधी की समाधि और पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की 'सदैव अटल समाधि' पर नमन करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी। बाद में प्रधानमंत्री राष्ट्रीय युद्ध स्मारक भी गए, जहां उन्होंने देश के महान सपूतों को श्रद्धांजलि अर्पित की। राजघाट, सदैव अटल समाधि और राष्ट्रीय युद्ध स्मारक स्थल पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह, वरिष्ठ भाजपा नेतागण और अन्य गणमान्य लोग भी थे।

कमल संदेश

पाक्षिक पत्रिका

संपादक
प्रभात झा

कार्यकारी संपादक
डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक
संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य
सत्यपाल
राम नयन सिंह

कला संपादक
विकास सैनी
मुकेश कुमार

संपर्क
फोन: +91(11) 23381428

फैक्स
फैक्स: +91(11) 23387887

ई-मेल
mail.kamalsandesh@gmail.com
mail@kamalsandesh.com

वेबसाइट: www.kamalsandesh.org

विषय-सूची

एक ही लक्ष्य 'जनसेवा'

06

2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने अपना परचम लहराते हुए केंद्र में सरकार बनाई थी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में सरकार ने 'सबका साथ-सबका विकास' के मंत्र को चरितार्थ करते हुए हर नागरिक के जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति की दिशा में गंभीरता से प्रयास...

लेख

लद गए अब महाराजा और राजा के दिन 37

मोदी 2.0: सत्ता की परिभाषा बदलनेवाला जनादेश 38

जन आकांक्षाओं का प्रकटीकरण 40

भाजपा ने कैसे ओडिशा में पैठ बनाई 42

अच्छा अर्थशास्त्र ही अच्छी राजनीति है 43

विजयी हुआ भारत 45

विशेष साक्षात्कार

हमारी विचारधारा है 'राष्ट्र प्रथम': रामलाल 34

भाजपा निश्चित रूप से बंगाल में अगली सरकार बनाएगी: सुरेश पुजारी 47

अन्य

केन्द्रीय मंत्रिपरिषद 10

महत्वपूर्ण तथ्य 16

यह जनता का सकारात्मक वोट है: भाजपा संसदीय बोर्ड 17

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अनेक राष्ट्राध्यक्षों/शासनाध्यक्षों के साथ की मुलाकात 23

श्रद्धांजलि

प्रकाश पंत / शीला गौतम 16

18 इस चुनाव ने दिलों को जोड़ने का काम किया : नरेन्द्र मोदी

मैं हृदय से आप सबका आभार व्यक्त करता हूं। भाजपा ने संसदीय दल के नेता के रूप में...

21 कैबिनेट की प्रथम बैठक में लिए गए कई ऐतिहासिक निर्णय

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में 31 मई को एक नई योजना को मंजूरी दी गई। यह ऐतिहासिक निर्णय देश...

24 हम लोकतंत्र में विश्वास करने वाले लोग हैं: नरेन्द्र मोदी

लोकसभा चुनाव 2019 में मिली भारी जीत के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी काशी की जनता को आभार जताने 27 मई को वाराणसी पहुंचे...

32 अगले पांच साल जनचेतना-जन भागीदारी के लिए : नरेन्द्र मोदी

लोकसभा चुनाव में जबरदस्त जीत दर्ज करने के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 26 मई को...

प्रकाशक एवं मुद्रक: डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा मुद्रित, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास के लिए डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा प्रकाशित, एच.टी. मीडिया लिमिटेड, बी-2, सेक्टर-63, नोएडा (उ.प्र.)-201307 से मुद्रित एवं डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी.-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003 से प्रकाशित। सम्पादक- प्रभात झा

twitter

@narendramodi

जनता ने हमें बहुत बड़ा आदेश दिया है। जनप्रतिनिधि के लिए कोई भेद-रेखा नहीं। जो हमारे साथ रहे हैं, हम उनके लिए भी हैं। जो भविष्य में हमारे साथ चलेंगे, हम उनके लिए भी हैं।

@AmitShah

60 के दशक के बाद से इस देश के लोकतंत्र को परिवारवाद, जातिवाद और तुष्टिकरण रूपी तीन नासूरों ने डंसा हुआ था। हर एक जनादेश कहीं ना कहीं इन तीन नासूरों से ग्रस्त था। 2019 के जनादेश ने पहली बार देश को इन तीन नासूरों से मुक्त कर 'पॉलिटिक्स ऑफ परफॉर्मेंस' पर अपनी मोहर लगाई है।

@Ramlal

ममता की तानाशाही ने नृशंसता की पराकाष्ठा पार कर दी है। बंगाल में लगातार हो रही है राजनीतिक हिंसा। 24 परगना में तृणमूल पोषित गुंडों ने भाजपा के तीन समर्पित कार्यकर्ताओं तपन मंडल, सुकांत मंडल और प्रदीप मंडल की नृशंस हत्या कर दी। कई लापता हैं।

facebook

कानूनी कार्रवाई द्वारा समाजवादी सरकार के पाप के पचड़े को साफ करने के लिए सफाई अभियान चल रहा है। जो भी हमारे युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने की कुत्सित चेष्टा करेगा, जो भी दोषी होगा, कितना ही बड़ा क्यों न हो इन सबकी जगह जेल होगी। यह पूरे प्रदेश की जनता को मैं आश्वस्त करता हूं।

प्रदेश में माध्यमिक, उच्च, प्राविधिक शिक्षा की या कोई भी प्रतियोगी परीक्षा हो, पारदर्शिता और पूरी ईमानदारी दिखनी चाहिए। मैंने सभी आयोगों के अध्यक्षों को बुलाकर स्पष्ट किया है कि यह उनकी जिम्मेदारी है कि प्रदेश के किसी भी युवा को नियुक्तियों में धांधली के चलते परेशान न होना पड़े।

— योगी आदित्यनाथ

मुझे संतोष है कि केंद्र सरकार की आयुष्मान भारत योजना व राज्य सरकार की अटल आयुष्मान उत्तराखंड योजना का फायदा व्यापक तौर पर आम लोगों को मिल रहा है। प्रदेश में अब तक 38 हजार लोग #AAUY का लाभ लेकर मुफ्त उपचार करा चुके हैं। नरेन्द्र मोदी जी की प्रेरणा से हम सर्वे संतु निरामयः के संकल्प की ओर बढ़ रहे हैं।

— त्रिवेन्द्र सिंह रावत

कमल संदेश परिवार की ओर से
सुधी पाठकों को
योग दिवस (21 जून)
की हार्दिक शुभकामनाएं!

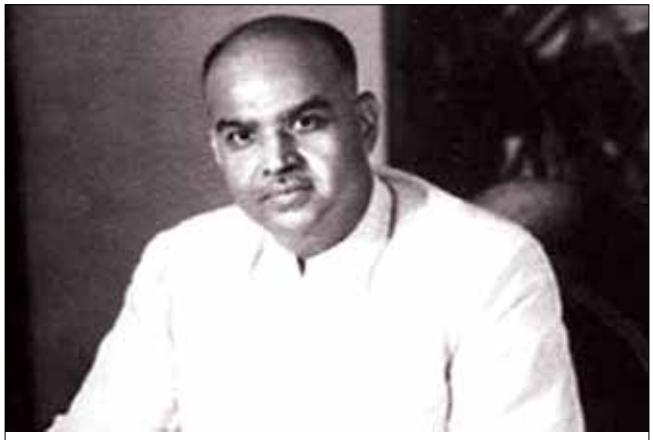

(6 जुलाई 1901 - 23 जून 1953)
कमल संदेश परिवार की ओर से
सुधी पाठकों को डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी
की पुण्यतिथि पर
शत शत नमन!

स्वर्णिम भविष्य की ओर भारत

श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा पुनः भारत के प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के साथ ही ऐसा प्रतीत होने लगा है कि देश एक नये युग में प्रवेश कर गया है। इस नए युग को भारतीय पटल पर कार्य–आधारित, सुशासन एवं विकास की राजनीति के उदय के रूप में देखा जा सकता है। यह युग देश को 'सबका साथ, सबका विकास' की अवधारणा से अभिमंत्रित कर 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के निर्माण का पथ प्रशस्त कर रहा है। यह युग 'अंत्योदय' की अवधारणा के प्रति समर्पित है तथा गरीब से गरीब व्यक्ति के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। देश के सर्वांगीण विकास के केंद्र में दलित, आदिवासी, पिछड़ा, महिला एवं युवा को रखकर एक सुदृढ़, समृद्ध एवं आत्मविश्वास से परिपूर्ण भारत के निर्माण का यह युग है। यह एक ऐसा युग है जिसकी प्राथमिकता ग्रामीण भारत है, जो उच्च तकनीक युक्त कृषि का स्वप्न देख रहा है और जिसमें किसान–मजदूर के जीवन के हर क्षेत्र को प्रकाशमान करने की क्षमता है। भविष्योन्मुखी एवं दूरदर्शी नीतियों के माध्यम से एक ऐसे भारत के निर्माण का युग है, जो हर क्षेत्र में अग्रणी हो, विकसित, समृद्ध एवं सुदृढ़ हो। श्री नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के साथ ही उस युग का आगमन हो गया, जिसमें 'नए भारत' के सपनों को साकार करने की सभी संभावनाएं विद्यमान हैं।

भाजपानीत राजग को लोकसभा चुनाव 2019 में मिला जबरदस्त जनादेश प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व एवं अथक परिश्रम का परिणाम है। इसी कठिन परिश्रम एवं तप के बल पर कांग्रेसनीत यूपीए के शासनकाल के भ्रष्टाचार, पॉलिसी पैरालिसिस, कुशासन, आर्थिक गिरावट, कमरतोड़ महंगाई एवं निरंतर बढ़ते बजट घाटे से देश को पिछले पांच वर्षों में उबारने में श्री नरेन्द्र मोदी सफल हुए हैं। कांग्रेसनीत यूपीए के कुशासन के बीच देश को श्री नरेन्द्र मोदी के रूप में एक आशा की किरण दिखाई दी थी, जिसके परिणामस्वरूप कई दशकों के बाद जनता ने भाजपा को 2014 की लोकसभा चुनावों में पूर्ण बहुमत का जनादेश दिया था। इस जनादेश के पीछे पूरे देश की आशाएं, अपेक्षाएं एवं आकांक्षाएं जुड़ी हुई थी। पांच वर्षों के सकारात्मक कार्य, निरंतरता एवं परिश्रम की पराकाष्ठा के साथ–साथ अभिनव योजनाएं एवं परिणामकारक नीतियों, शासन में नई कार्य–संस्कृति, संस्थाओं को पुनर्जीवन देने वाले कार्य, समयानुकूल निर्णय एवं कभी–कभी कठोर निर्णय लेने की क्षमता के फलस्वरूप आज एक ऐसी सरकार केन्द्र में है जिसकी प्रमाणिकता, विश्वसनीयता एवं कार्यक्षमता से पूरा देश गौरवान्वित हो रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रतिबद्धता का ही परिणाम है कि आज देश एक भ्रष्टाचारमुक्त–सरकार देख रहा है, जो देश के दूर–दराज इलाकों में भी गरीब से गरीब तक सरकारी योजनाओं का लाभ सीधा–सीधा पहुंचाने में सक्षम है। यह पहली बार हुआ है कि समाज की कतार के अंतिम में खड़ा व्यक्ति सरकारी योजनाओं का सीधा लाभार्थी बना है और पक्का आवास, बिजली कनेक्शन, गैस सिलिंडर, शौचालय, बैंक खाता और अन्य मूलभूत सुविधाओं के साथ–साथ अपने परिवार को सामाजिक सुरक्षा एवं दस करोड़ परिवारों को 5 लाख तक का स्वास्थ्य सुरक्षा प्राप्त हो पाया है। इसमें कोई संदेह नहीं कि जिस प्रकार से 2014 में संसदीय दल के नेता चुने जाने के बाद श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी सरकार को गरीबों, दलितों, आदिवासियों, वंचितों एवं शोषितों के प्रति समर्पित रहने की बात की थी, वे न केवल अपने बातों के लिए प्रतिबद्ध रहे, बल्कि उससे भी आगे बढ़कर सरकार को इन वर्गों के लिए समर्पित किया– इसका परिणाम सबके सामने है- 2014 से भी बड़ा जनादेश जो कि गरीब से गरीब व्यक्ति के आशीर्वाद का परिणाम है। देश की जनता ने जाति, मजहब एवं क्षेत्र की विभाजनकारी दीवारों को तोड़कर यह सुनिश्चित किया है कि भारत सुरक्षित हाथों में रहे और एक सुनहरे भविष्य का आलिंगन करे।

भाजपानीत राजग को लोकसभा चुनाव 2019 में मिला जबरदस्त जनादेश प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व एवं अथक परिश्रम का परिणाम है। इसी कठिन परिश्रम एवं तप के बल पर कांग्रेसनीत यूपीए के शासनकाल के भ्रष्टाचार, पॉलिसी पैरालिसिस, कुशासन, आर्थिक गिरावट, कमरतोड़ महंगाई एवं निरंतर बढ़ते बजट घाटे से देश को पिछले पांच वर्षों में उबारने में श्री नरेन्द्र मोदी सफल हुए हैं।

2019 का जबरदस्त जनादेश ने न केवल मोदी सरकार पर जन–जन के भारी विश्वास का परिणाम है, बल्कि विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की बढ़ती जनाकांक्षाओं के दायित्वों को निर्वहन करने का भी संदेश है। भारत एक ऐसा राष्ट्र है जो प्राचीनकाल से ही भिन्न–भिन्न परंपराओं, मान्यताओं एवं आस्थाओं के बीच विविधतापूर्ण संस्कृति के लिये पूरे विश्व में विख्यात है। यह जबरदस्त जनादेश विभाजनकारी राजनीति को एक मुंहतोड़ जवाब है तथा कार्य–आधारित, सुशासन एवं विकास की राजनीति के विजय का प्रतीक है। यह अत्यंत स्वागत योग्य स्थिति है, जहां लोग अपनी आकांक्षाओं से प्रेरित होकर एक सुदृढ़ एवं समृद्ध भारत के निर्माण के लिए जनादेश दे रहे हैं। जन–जन को यह पूर्ण विश्वास है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के करिश्माई एवं दूरदर्शी नेतृत्व में पूरा देश आज एकजुट उठ खड़ा हुआ है और अब एक गौरवशाली भविष्य भारत की बाट जोह रहा है। ■

shivshakti@kamalsandesh.org

एक ही लक्ष्य 'जनसेवा'

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सहित 58 मंत्रियों ने ली पद और गोपनीयता की शपथ

2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने अपना परचम लहराते हुए केंद्र में सरकार बनाई थी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में सरकार ने 'सबका साथ-सबका विकास' के मंत्र को चरितार्थ करते हुए हर नागरिक के जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति की दिशा में गंभीरता से प्रयास किए। चाहे गरीब कल्याण का मुद्दा हो, राष्ट्रीय सुरक्षा का मसला हो या फिर विदेशों में भारत की साख का मामला, मोदी सरकार ने हर मोर्चे पर उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। 2019 के लोकसभा चुनाव में जनता ने फिर से भाजपा को स्थायी और मजबूत सरकार बनाने का जनादेश दिया। 2014 के चुनाव में भाजपा ने बहुमत प्राप्त करते हुए जहां 282 सीटें प्राप्त की थी, वहीं सतरहवीं लोकसभा के चुनाव में पार्टी को अब तक की सबसे बड़ी जीत हासिल हुई और भाजपा ने अपने दम पर 303 सीटें जीती। राजग को 353 सीटें मिलीं। श्री नरेन्द्र मोदी दूसरी बार प्रधानमंत्री बने।

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने 30 मई 2019 को राष्ट्रपति भवन के प्रांगण में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और उनके मंत्रीपरिषद के सदस्यों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। इस ग्रहण समारोह के दौरान 25 केन्द्रीय मंत्री, नौ राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और 24 ने राज्यमंत्री के तौर पर शपथ ली।

राष्ट्रपति भवन के प्रांगण में शाम को शुरू हुए शपथ ग्रहण समारोह में सबसे पहले प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने शपथ ली। बाद में सर्वश्री राजनाथ सिंह, अमित शाह, नितिन गडकरी, सदानंद गौड़ा, श्रीमती निर्मला सीतारमण, रामविलास पासवान, नरेन्द्र सिंह तोमर, रविशंकर प्रसाद, श्रीमती हरसिमरत कौर बादल, थावरचंद गहलोत, एस. जयशंकर, रमेश पोखरियाल निशंक, अर्जुन मुंडा, श्रीमती स्मृति

@AmitShah
पूरे भारत के लिए ऐतिहासिक क्षण। नरेन्द्र मोदी जी को लगातार दूसरी बार भारत का प्रधानमंत्री बनने पर बधाई। मैं निश्चिंत हूं कि भारत आपके सक्षम नेतृत्व में नयी ऊंचाइयां हासिल करेगा।

@rajnathsingh
एक बार फिर से भारत के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेने पर श्री नरेन्द्र मोदी को बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं। मुझे विश्वास है कि मोदीजी के नेतृत्व में भारत शांति और समृद्धि की नई ऊंचाइयां प्राप्त करेगा। केंद्रीय मंत्री के रूप में नई पारी के प्रति आशान्वित।

@arunjaitley
भारत के प्रधानमंत्री के रूप में दूसरी बार शपथ लेने पर श्री नरेन्द्र मोदी जी को बधाई। केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल सभी सदस्यों को मेरी हार्दिक शुभकामना। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत तेज गति से विकास कर रहा है।

@SushmaSwaraj
प्रधानमंत्रीजी, आपने पांच वर्षों तक मुझे विदेश मंत्री के तौर पर देशवासियों और प्रवासी भारतीयों की सेवा करने का मौका दिया। आपने पूरे कार्यकाल में व्यक्तिगत तौर पर भी बहुत सम्मान दिया। मैं आपके प्रति बहुत आभारी हूं। हमारी सरकार बहुत यशस्विता से चले, प्रभु से मेरी यही प्रार्थना है।

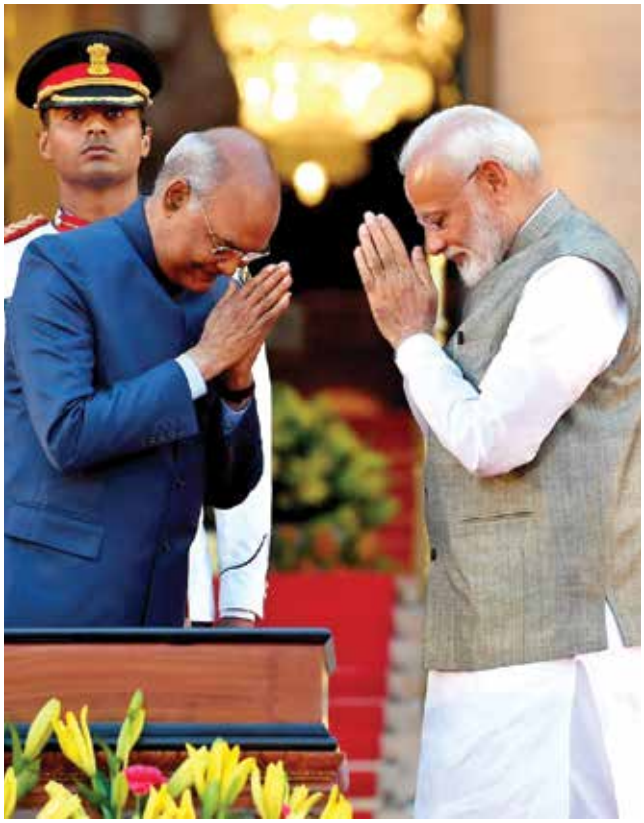

ईरानी, डॉ. हर्षवर्धन, प्रकाश जावडेकर, पीयूष गोयल, धर्मेन्द्र प्रधान, मुख्तार अब्बास नकवी, प्रह्लाद जोशी, महेन्द्र नाथ पांडे, अरविंद सावंत, गिरिराज सिंह और गजेन्द्र सिंह शेखावत ने केन्द्रीय मंत्री के तौर पर शपथ ली। वहीं राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) के रूप में संतोष गंगवार, राव इन्द्रजीत सिंह, श्रीपद येशो नाइक, जितेन्द्र सिंह, किरण रिजिजू, प्रह्लाद पटेल, आर.के. सिंह, हरदीप सिंह पुरी, मनसुख मांडविया तथा राज्यमंत्री के रूप में फग्गन सिंह कुलस्ते, अश्वनी चौबे, अर्जुन मेघवाल, वीके सिंह, कृष्णपाल गुर्जर, रावसाहेब दानवे, जी किशन रेड्डी, पुरुषोत्तम रुपाला, रामदास अठावले, साध्वी निरंजन ज्योति, बाबुल सुप्रियो, संजीव बाल्यान, संजय धोत्रे श्यामराव, अनुराग ठाकुर, सुरेश अंगाजि, नित्यानंद राय, रतनलाल कटारिया, वी. मुरलीधरन, श्रीमती रेणुका सिंह, सोम प्रकाश, रामेश्वर तेली, प्रताप चंद्र सारंगी, कैलाश चौधरी और श्रीमती देबोश्री चौधरी ने पद एवं गोपनीयता की शपथ ली।

राष्ट्रपति भवन में अब तक के सबसे बड़े हुए आयोजन में आठ विदेशी राष्ट्राध्यक्षों सहित लगभग आठ हजार गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति से समारोह में चार चांद लग गया था। इससे पहले प्रधानमंत्री मोदी के वर्ष 2014 के शपथ ग्रहण समारोह में दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) के नेताओं के साथ पांच हजार मेहमानों ने समारोह में भाग लिया था।

इस बार के समारोह में उद्योग, फिल्म एवं खेल जगत की जानी-मानी हस्तियों सहित बिम्सटेक देशों के नेताओं के साथ ही किर्गिजस्तान

राजघाट, अटल समाधि स्थल और वॉर मेमोरियल पहुंचे प्रधानमंत्री मोदी

प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने से पहले कार्यकारी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सुबह राजघाट और अटल समाधि स्थल पर जाकर महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित की। प्रधानमंत्री के साथ भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह, उनके कैबिनेट के सहयोगी सर्वश्री नरेन्द्र सिंह तोमर, सुरेश प्रभु, धर्मेन्द्र प्रधान समेत कई लोग थे। उसके बाद प्रधानमंत्री का काफिला वॉर मेमोरियल पहुंचा, जहां रक्षामंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण समेत तीनों सेना प्रमुखों ने उनकी आगवानी की। वहां प्रधानमंत्री ने अमर शहीद जवानों को श्रद्धांजलि दी।

के राष्ट्रपति सर्वश्री सूरोनबे जीनबेकोव और मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रविन्द्र जगन्ननाथ ने भाग लिया।

समारोह में बांग्लादेश के राष्ट्रपति मोहम्मद अब्दुल हामिल, मॉरीशस के प्रधानमंत्री सर्वश्री प्रविंद्र जगरनाथ, भूटान के प्रधानमंत्री लोटे शेरिंग, थाईलैंड के विशेष दूत गीरीहसाडा बूनराच, वर्मा के राष्ट्रपति यू विंग मिंट, श्रीलंका के राष्ट्रपति मैत्रीपाल श्रीसेना, नेपाल के प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली ने भाग लिया।

इसके अलावा मुख्य न्यायाधीश श्री रंजन गोगोई सहित प्रशासन से जुड़े वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। इस शपथ ग्रहण में पूर्व राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल, कांग्रेस अध्यक्ष श्री राहुल गांधी, संप्रग अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी, पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह एवं कांग्रेस के वरिष्ठ नेता श्री गुलाम नबी आजाद ने समारोह में भाग लिया। इसके अलावा पुडुचेरी के मुख्यमंत्री सर्वश्री वी. नारायणस्वामी, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री वाईएस जगदीश मोहन रेड्डी ने भाग लिया।

समारोह में फिल्मी सितारे भी हिस्सा बने, जिसमें सुपरस्टार सर्वश्री रजनीकांत, फिल्म निर्माता करण जोहर, मधुर भंडारकर, फिल्म अभिनेत्री सुश्री कंगना रनौत प्रमुख थीं। वहीं, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह सर्वश्री कृष्ण गोपाल और सुरेश सोनी तथा संघ की अखिल भारतीय कार्यकारणी के सदस्य इन्द्रेश कुमार भी शामिल रहे। उद्योगपतियों में सर्वश्री गौतम अडानी, मुकेश अंबानी आदि भी शपथ ग्रहण समारोह के साक्षी बने। ■

केन्द्रीय मंत्रिपरिषद

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सलाह पर राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द ने 31 मई को केन्द्रीय मंत्रिपरिषद के निम्नलिखित सदस्यों के बीच विभागों के बंटवारे का निर्देश दिया :

श्री नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री, कार्मिक, जन शिकायत और पेंशन मंत्रालय, परमाणु ऊर्जा विभाग, अंतरिक्ष विभाग। सभी महत्वपूर्ण नीतिगत मुद्दे तथा वे सभी विभाग, जो किसी मंत्री को आवंटित नहीं किए गए हैं।

कैबिनेट मंत्री

श्री राजनाथ सिंह

रक्षा मंत्री

श्री अमित शाह

गृह मंत्री

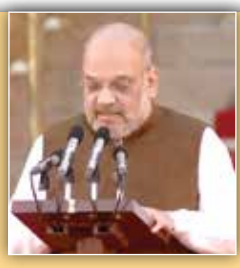

श्री नितिन जयराम गडकरी

सड़क परिवहन एवं राजमार्ग और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री

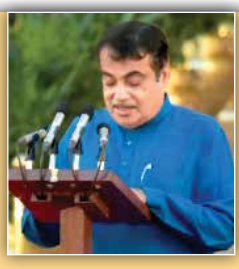

श्री डी.वी. सदानंद गौड़ा

रसायन एवं उर्वरक मंत्री

श्रीमती निर्मला सीतारमन

वित्त मंत्री और कॉरपोरेट कार्य मंत्री

श्री रामविलास पासवान

उपभोक्ता कार्य, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री

श्री नरेन्द्र सिंह तोमर

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री; ग्रामीण विकास मंत्री और पंचायती राज मंत्री

श्री रविशंकर प्रसाद

कानून एवं न्याय; संचार; इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री

श्रीमती हरसिमरत कौर बादल

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री

श्री थावर चंद गेहलोत

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री

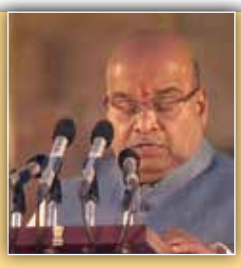

डॉ. सुब्रह्मण्यम जयशंकर

विदेश मंत्री

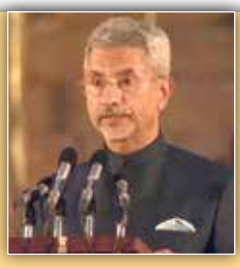

श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक'

मानव संसाधन विकास मंत्री

श्री अर्जुन मुंडा

जनजातीय कार्य मंत्री

श्रीमती स्मृति जुबिन ईरानी

महिला एवं बाल विकास और वस्त्र मंत्री

डॉ. हर्षवर्धन

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण; विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और पृथ्वी विज्ञान मंत्री

श्री प्रकाश जावड़ेकर

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन और सूचना एवं प्रसारण मंत्री

श्री पीयूष गोयल

रेल और वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री

श्री धर्मेन्द्र प्रधान

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस और इस्पात मंत्री

श्री मुख्तार अब्बास नकवी

अल्प संख्यक कार्य मंत्री

श्री प्रहलाद जोशी

संसदीय कार्य, कोयला और खान मंत्री

डॉ. महेन्द्रनाथ पांडेय

कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्री

श्री अरविन्द गणपत सावंत

भारी उद्योग एवं सार्वजनिक उद्यम मंत्री

श्री गिरिराज सिंह

पशुपालन, दुग्ध उत्पादन एवं मत्स्यपालन मंत्री

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत

जल शक्ति मंत्री

राज्य मंत्री
(स्वतंत्र प्रभार)

श्री संतोष कुमार गंगवार

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय (स्वतंत्र प्रभार)

श्री राव इन्द्रजीत सिंह

सांख्यिकी और कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय (स्वतंत्र प्रभार); और आयोजना मंत्रालय (स्वतंत्र प्रभार)

श्री श्रीपद येसो नाइक

आयुर्वेद, योगा और नेचरोपैथी, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय (स्वतंत्र प्रभार); और रक्षा मंत्रालय

डॉ. जितेन्द्र सिंह

पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार); प्रधानमंत्री कार्यालय; कार्मिक, जन शिकायत और पेंशन मंत्रालय, परमाणु ऊर्जा विभाग और अंतरिक्ष विभाग

श्री किरेन रिजिजु

युवा मामले एवं खेल मंत्रालय और अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय

श्री प्रह्लाद सिंह पटेल

संस्कृति मंत्रालय तथा पर्यटन मंत्रालय

श्री राजकुमार सिंह

विद्युत मंत्रालय, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय और कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय

श्री हरदीप सिंह पुरी

आवास एवं शहरी मामले मंत्रालय, नागर विमानन मंत्रालय, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

श्री मनसुख मांडविया

जहाजरानी और रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय

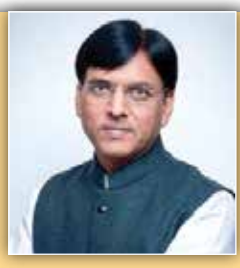

राज्य मंत्री

श्री फग्गनसिंह कुलस्ते

इस्पात मंत्रालय

श्री अश्विनी कुमार चौबे

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय

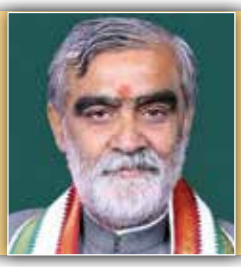

श्री अर्जुनराम मेघवाल

संसदीय कार्य मंत्रालय; और भारी उद्योग एवं सार्वजनिक उद्यम मंत्रालय

जनरल (सेवानिवृत्त) वी. के. सिंह

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय

श्री कृष्ण पाल गुर्जर

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय

श्री दानवे रावसाहब दादाराव

उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय

श्री जी. किशन रेड्डी

गृह मंत्रालय

श्री पुरुषोत्तम रूपाला

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय

श्री रामदास अठावले

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय

साध्वी निरंजन ज्योति

ग्रामीण विकास मंत्रालय

श्री बाबुल सुप्रियो

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

श्री संजीव कुमार बालियान

पशुपालन, दुग्ध उत्पादन एवं मत्स्यपालन मंत्रालय

श्री धोत्रे संजय शामराव

मानव संसाधन विकास, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय

श्री अनुराग सिंह ठाकुर

वित्त और कॉरपोरेट कार्य मंत्रालय

श्री अंगड़ी सुरेश चन्नबसप्पा

रेल मंत्रालय

श्री नित्यानंद राय

गृह मंत्रालय

श्री रतन लाल कटारिया

जल शक्ति; सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय

श्री वी. मुरलीधरन

विदेश मंत्रालय; संसदीय कार्य मंत्रालय

श्रीमती रेणुका सिंह सरुता

जनजातीय कार्य मंत्रालय

श्री सोम प्रकाश

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

श्री रामेश्वर तेली

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय

श्री प्रताप चंद्र सारंगी

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय; और पशुपालन, दुग्ध उत्पादन एवं मत्स्यपालन मंत्रालय

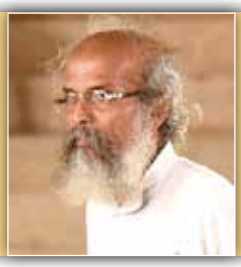

श्री कैलाश चौधरी

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय

श्रीमती देबाश्री चौधरी

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय

लोकसभा चुनाव नतीजे - रोचक तथ्य

01

राहुल गांधी हारे: कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी इस बार दो लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़े – अमेठी और वायनाड़। राहुल वायनाड़ से तो जीत गए लेकिन अमेठी में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। राहुल गांधी को भाजपा की वरिष्ठ नेता स्मृति ईरानी ने करारी शिकस्त दी।

02

लालू यादव की पार्टी खाता नहीं खोल पाई: बिहार में सबसे करारा झटका लालू प्रसाद यादव की पार्टी आरजेडी को लगा है। 1997 में पार्टी के गठन के बाद ऐसा पहली बार हुआ है कि आरजेडी लोकसभा चुनाव में खाता भी नहीं खोल पाई। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की आंधी में बिहार में महागठबंधन पूरी तरह असफल रहा। राज्य की 40 सीटों में से एनडीए ने 39 सीटों पर जीत दर्ज की, जबकि किशनगंज में कांग्रेस को जीत नसीब हुई।

03

शानदार शपथ ग्रहण समारोह : नरेन्द्र मोदी का इस बार का शपथ ग्रहण समारोह राष्ट्रपति भवन में अब तक का सबसे बड़ा समारोह था। जहां 2014 में मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में लगभग पांच हज़ार लोग शामिल हुए थे, वहीं इस बार के समारोह में आठ हज़ार से ज्यादा लोग सम्मिलित हुए। यानी पिछली बार से करीब तीन हज़ार लोग ज्यादा आए। बिम्सटेक देशों— बांग्लादेश, म्यांमार, श्रीलंका, थाइलैंड, नेपाल और भूटान के अलावा किर्गिस्तान और मॉरीशस के राज्याध्यक्षों ने भी इस बार मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में हिस्सा लिया। इसके अलावा पिछले एक साल के दौरान बंगाल में राजनैतिक हिंसा में मारे गए भाजपा कार्यकर्ताओं के परिजनों को भी इस समारोह में आमंत्रित किया गया था।

04

17 राज्यों में कांग्रेस का खाता नहीं खुला: देश की सबसे पुरानी और सालों तक सत्ता में रहने वाली भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) का भारत के कुल 29 राज्यों और सात केंद्र शासित प्रदेशों में से 17 में खाता नहीं खुला। जबकि देश के सबसे ज्यादा लोकसभा सीटों वाले प्रमुख प्रदेशों उत्तर प्रदेश और बिहार में कांग्रेस को महज एक–एक सीटें मिली। इसके अलावा गुजरात, हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, ओडिशा, उत्तराखंड, आंध्र प्रदेश, जम्मू–कश्मीर, दिल्ली, मणिपुर, नगालैंड, मिजोरम, सिक्किम, चंडीगढ़, दादर–नगर हवेली, दमन–दीव और लक्षद्वीप में कांग्रेस एक सीट भी नहीं जीत पाई।

05

मोदी का कमाल: आम चुनाव में भाजपा की जबरदस्त जीत के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने लगातार पूर्ण बहुमत के साथ दूसरी बार सरकार बनाई। प्रधानमंत्री श्री मोदी ऐसा करने वाले देश के तीसरे और पहले गैर कांग्रेसी नेता हैं। देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में तीन बार कांग्रेस की बहुमत वाली सरकार सत्तारूढ़ हुई थी। इसके बाद इंदिरा गांधी के नेतृत्व में 1967 और 1971 में लगातार दो बार इस तरह की सरकार बनी थी। उसके बाद अब प्रधानमंत्री मोदी यह करिश्मा दोहराने में सफल हुए हैं। कांग्रेस ने 1980 और 1984 में भी लगातार लोकसभा में बहुमत हासिल किया गया था, लेकिन दोनों बार प्रधानमंत्री अलग–अलग थे।

यह जनता का सकारात्मक वोट है

भाजपा संसदीय बोर्ड ने 24 मई को एक प्रस्ताव पारित कर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अपार जनसमर्थन से केंद्र में राजग की सरकार बनाने के लिए देश की जनता का आभार व्यक्त किया और कहा कि श्री मोदी के नेतृत्व में सरकार की गरीब कल्याणकारी नीति, राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण, सबका साथ-सबका विकास के मूलमंत्र के साथ भारत की वैश्विक साख बढ़ाने के लिए यह जनता का सकारात्मक वोट है। यहां प्रस्तुत है प्रस्ताव का पूरा पाठ:

भारतीय जनता पार्टी संसदीय बोर्ड, 'फिर एक बार' प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में अपार जनसमर्थन से केंद्र में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार बनाने के लिए देश की जनता का ह्रदय से आभार व्यक्त करती है।

विगत कार्यकाल में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सरकार की गरीब कल्याणकारी नीति, राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण, सबका साथ-सबका विकास के मूलमंत्र के साथ भारत की वैश्विक साख बढ़ाने के लिए यह जनता का सकारात्मक वोट है।

इस चुनाव में विपक्ष के द्वारा लोकतंत्र को हराने की लगातार कोशिशें हुई, चुनाव प्रक्रिया को लेकर जिस प्रकार भ्रम फैलाया गया उन सभी नकारात्मक विषयों को जनता ने स्पष्ट रूप से नकार दिया। पश्चिम बंगाल में राजनैतिक हिंसा के बावजूद वहां की जनता ने जो स्पष्ट मत भारतीय जनता पार्टी को दिया है, संसदीय बोर्ड पश्चिम बंगाल की जनता को हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

पार्टी संसदीय बोर्ड चुनावी राजनैतिक हिंसा के शिकार शहीद कार्यकर्ताओं के प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त करता है। उनके राष्ट्रवादी विचार के कारण हुए बलिदान के प्रति संसदीय बोर्ड कृतज्ञता व्यक्त करती है।

भारतीय जनता पार्टी संसदीय दल इस बात पर भी संतोष व्यक्त करता है कि देश के सभी भागों में पार्टी के करोड़ों कार्यकर्ताओं ने अथक परिश्रम के साथ राष्ट्रवाद के विचार एवं सरकार के सकारात्मक योगदान से जनमानस को जोड़कर पार्टी को विजय बनाने का प्रयास किया। पार्टी के पन्ना प्रमुख व बूथ प्रमुख से लेकर राष्ट्रीय टीम के सभी पदाधिकारी को संसदीय बोर्ड बधाई देती है।

विशेष रूप से उत्तर प्रदेश एवं बिहार में तथाकथित गठबंधन की हार और बंगाल, उत्तर-पूर्व में भारतीय जनता पार्टी की अप्रत्याशित सफलता, दक्षिण में पार्टी की मत प्रतिशत में वृद्धि इस बात का संकेत है कि पार्टी ने देश के सभी क्षेत्रों और वर्गों को सुशासन की नीतियों से जोड़ा है। देश की पूर्वोत्तर राज्य अरुणाचल प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की पूर्ण बहुमत के सरकार बनाने के लिए संसदीय बोर्ड अरुणाचल प्रदेश की जनता का भी हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

भारतीय जनता पार्टी संसदीय बोर्ड पुनः देशवासियों को इस बात का विश्वास दिलाता है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आगामी 5 वर्षों में भारत को यशस्वी बनाते हुए नए भारत के निर्माण के लिए प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन कृतसंकल्पित होकर कार्य करेगी।

संसदीय बोर्ड इस बात का भी विश्वास व्यक्त करता है कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत जब 2022 में आज़ादी के 75 साल पूरे करेगा, तब तक हमारे महान स्वतंत्रता सेनानियों ने जिस भारत का सपना देखा है उसे पूरा करें और मजबूत, समृद्ध, विकसित तथा समावेशी भारत का निर्माण हो। ■

राष्ट्रपति ने नरेन्द्र मोदी को भारत के प्रधानमंत्री पद पर नियुक्त किया

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी अपने संबोधन के बाद सांसदों के साथ खुशियां बांटी और वे नई सरकार बनाने का दावा प्रस्तुत करने हेतु महामहिम राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद से मिले। गौरतलब है कि भाजपा अध्यक्ष श्री अमित शाह के नेतृत्व में श्री प्रकाश सिंह बादल, श्री राजनाथ सिंह, श्री नीतीश कुमार, श्री राम विलास पासवान, श्रीमती सुषमा स्वराज, श्री उद्धव ठाकरे, श्री नितिन गडकरी, श्री के पलानीस्वामी, श्री कोनराड संगमा और श्री नीपिहु रियो सहित राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन का एक प्रतिनिधिमंडल भी राष्ट्रपति से मिला।

श्री नरेन्द्र मोदी को भाजपा संसदीय दल का नेता चुने जाने का एक पत्र राष्ट्रपति को दिया गया। एनडीए के घटक दलों के समर्थन के पत्र भी राष्ट्रपति को सौंपे गए।

राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद ने भारत के संविधान के अनुच्छेद 75(1) के तहत उन्हें प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए 25 मई को श्री नरेन्द्र मोदी को भारत के प्रधानमंत्री पद पर नियुक्त किया। उन्होंने श्री मोदी से आग्रह किया कि वह केन्द्रीय मंत्रिपरिषद के नियुक्त किए जाने वाले अन्य सदस्यों के बारे में उन्हें सुझाव दें और राष्ट्रपति भवन में शपथ समारोह की तिथि एवं समय इंगित करें। ■

इस चुनाव ने दिलों को जोड़ने का काम किया : नरेन्द्र मोदी

सेंट्रल हॉल (संसद भवन) में राजग की बैठक में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए भाषण का संपादित अंश :

मैं हृदय से आप सबका आभार व्यक्त करता हूं। भाजपा ने संसदीय दल के नेता के रूप में सर्वसम्मति से मुझे चुना। एनडीए के भी सांसदों और दलों ने इसका समर्थन किया। इसके लिए मैं आपका हृदय से बहुत-बहुत आभारी हूं। आज नए भारत के संकल्प को एक नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ाने के लिए यहां से एक नई यात्रा को आरंभ करने वाले हैं। विशेष रूप से जो पहली बार चुनकर आए हैं, वे विशेष अभिनंदन के अधिकारी हैं। इसलिए मैं उनको अनेक-अनेक शुभकामनाएं देता हूं।

जनता ने हमें सेवाभाव के कारण स्वीकार किया : भारत में तो चुनाव अपने आप में उत्सव था। मतदान भी अनेक रंगों से भरा हुआ था, लेकिन विजयोत्सव उससे भी शानदार था। प्रचंड जनादेश जिम्मेदारियों को भी बहुत बढ़ा देता है। जिम्मेदारियों को हम सहर्ष स्वीकार करने के लिए निकले हुए लोग हैं। उसके लिए नई ऊर्जा, नई उमंग के साथ हमें आगे बढ़ना है। भारत का लोकतंत्र, भारत का मतदाता, भारत का नागरिक उसका जो नीर-क्षीर विवेक है, शायद किसी मापदंड से उसे मापा नहीं जा सकता है। सत्ता का रुतबा भारत के मतदाता को कभी प्रभावित नहीं करता है। सत्ता-भाव न भारत का मतदाता स्वीकार करता है न पचा पाता है। इस देश की विशेषता है कि बड़े से बड़े सत्ता सामर्थ्य के सामने भी सेवाभाव को वो सिर झुकाकर स्वीकार करता है। हम चाहे भाजपा या एनडीए के प्रतिनिधि बनकर आए हों, जनता ने हमें स्वीकार किया है सेवाभाव के कारण।

वरिष्ठ साथियों ने दिया आशीर्वाद : रामकृष्ण परमहंस का एक ही संदेश रहता था कि जीव में ही शिव है, ये सेवा भाव हमारे लिए और देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए इससे बड़ा कोई मार्ग नहीं हो सकता। आज एनडीए के भी सभी वरिष्ठ साथियों ने आशीर्वाद दिया है। आप सबने मुझे नेता के रूप में चुना है। मैं इसे एक व्यवस्था का हिस्सा मानता हूं। मैं भी बिल्कुल आप में से एक हूं, आपके बराबर हूं। हमें कंधे से कंधा मिलाकर चलना है। एनडीए की यही तो ताकत है, विशेषता है।

सामाजिक एकता का आंदोलन बना यह चुनाव : आम तौर पर चुनाव बांट देता है, दूरियां पैदा करता है, दीवार बना देता है, खाई पैदा कर देता है, लेकिन 2019 के चुनाव ने दीवारों को तोड़ने का काम किया है। दिलों को जोड़ने का काम किया है। 2019 का चुनाव सामाजिक एकता

का आंदोलन बन गया, समता भी, ममता भी, समभाव भी, ममभाव भी। इस वातावरण ने इस चुनाव को एक नई ऊंचाई दी। भारत के लोकतांत्रिक जीवन में, चुनावी परंपरा में देश की जनता ने एक नए युग का प्रारंभ किया है। हम सब उसके साक्षी हैं। 2014 से 2019 तक देश हमारे साथ चला है, कभी-कभी हमसे दो कदम आगे चला है, इस दौरान देश ने हमारे साथ भागीदारी की है। सरकार । को हमने जितना चलाया है, उससे ज्यादा सवा सौ करोड़ देशवासियों ने किया है। विश्वास की डोर जब मजबूत होती है, तो सत्ता समर्थक लहर पैदा होती है। यह लहर विश्वास की डोर से बंधी है। ये चुनाव पॉजिटिव वोट का चुनाव है। फिर से सरकार को लाना है, काम देना है, जिम्मेवारी देनी है। इस सकारात्मक सोच ने इतना बड़ा जनादेश दिया है।

देश परिश्रम की पूजा करता है : हिंदुस्तान के मतदाता में जो नीर-क्षीर विवेक है, उसकी ताकत देखिए। परिश्रम की अगर पराकाष्ठा है और ईमानदारी पर रत्ती भर भी संशय न हो तो देश उसके साथ चल पड़ता है। ये देश परिश्रम की पूजा करता है, ये देश ईमान को सिर पर बैठाता है। यही इस देश की पवित्रता है। जनता ने हमें इतना बड़ा जनादेश दिया है। स्वाभाविक है कि सीना चौड़ा हो जाता है, माथा ऊंचा हो जाता है। जनप्रतिनिधि के लिए ये दायित्व होता है, उसके लिए कोई भेदरेखा नहीं हो सकती है। जो हमारे साथ थे, हम उनके लिए भी हैं और जो भविष्य में हमारे साथ चलने वाले हैं, हम उनके लिए भी हैं। जनप्रतिनिधियों से मेरा आग्रह रहेगा कि मानवीय संवेदनाओं के साथ अब हमारा कोई पराया नहीं रह सकता है। इसकी ताकत बड़ी होती है। दिलों को जीतने की कोशिश करेंगे।

ट्रंप को जितने वोट मिले थे, उतने हमारे बढ़े : 2014 में भाजपा को जितने वोट मिले और 2019 में जो वोट मिले, उनमें जो वृद्धि हुई, यह वृद्धि करीब-करीब 25 प्रतिशत है। हालांकि ग्लोबल परिदृश्य में देखें तो अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को जितने वोट मिले थे, उतना हमारा इंक्रीमेंट है। मेरे जीवन के कई पड़ाव है, इसलिए मैं इन चीजों को भली-भांति समझता हूं, मैंने इतने चुनाव देखे, हार-जीत सब देखे, लेकिन मैं कह सकता हूं कि मेरे जीवन में 2019 का चुनाव एक प्रकार की तीर्थयात्रा थी। जो शब्दों में कहते हैं कि जनता-जनार्दन ईश्वर का रूप होती है, इसे मैंने चुनाव के दौरान अनुभव किया है।

माताओं-बहनों ने कमाल कर दिया : आजाद के बाद पहली बार इतने प्रतिशत वोटिंग हुई। इस बार माताओं-बहनों ने कमाल कर दिया है। इस बार महिला सांसदों का रिकॉर्ड भी तोड़ दिया। आजादी के बाद संसद में इतनी महिला सांसदों के बैठने की पहली घटना होगी। भारत की आजादी के बाद संसद में सबसे ज्यादा महिला सांसद चुनकर आई हैं, ये अपने-आप में बहुत बड़ा काम हमारी मातृशक्ति के लिए हुआ है।

एनडीए के पास एनर्जी और सिनर्जी दोनों हैं : देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए गठबंधन की राजनीति को हमें अपने आदर्शों और सिद्धांतों का हिस्सा बनाना ही पड़ेगा। मैं भारत का जो भावी चित्र देख रहा हूं। इन शक्तियों को जोड़ने के पीछे मेरी सीधी-सीधी समझ है। रीजनल एस्पिरेशन और नेशनल एंबिशन की दो पटरियों पर देश विकास की गति को पकड़ता है। नेशनल एंबिशन यानी एनए प्लस रीजनल एस्पिरेशन यानी आर मिलकर 'नारा' बनता है और इसी को लेकर हमें आगे बढ़ना है। एनडीए के पास दो महत्वपूर्ण चीजें हैं। एक है एनर्जी और दूसरा है सिनर्जी। ये एनर्जी और सिनर्जी एक ऐसा केमिकल है, जिसको लेकर हम सशक्त और सामर्थ्यवान हुए हैं।

छपास और दिखास से बचना चाहिए : छपास और दिखास से बचना चाहिए। इससे अगर बचकर चलते हैं तो बहुत कुछ बचा सकते हैं। हमारा मोह हमें संकट में डालता है। इसलिए हमारे नए और पुराने साथी इन चीजों से बचें क्योंकि अब देश माफ नहीं करेगा। हमारी बहुत बड़ी जिम्मेदारियां हैं। हमें इन्हें निभाना हैं। वाणी से, बर्ताव से, आचार से, विचार से हमें अपने आपको बदलना होगा। हम याद रखें कि लाखों कार्यकर्ताओं की वजह से हमें ये अवसर मिला है। इसलिए हमारे भीतर का कार्यकर्ता जिंदा रहना चाहिए। थोड़ा सा भी अहंकार अपने आसपास के लोगों को दूर कर देता है। अहंकार को जितना हम दूर कर सकते हैं, करना चाहिए।

अखबार के पन्नों से मंत्री नहीं बनते : हमें कोई वर्ग-विशेष, जाति, मोदी नहीं जिताता है। हमें सिर्फ और सिर्फ इस देश की जनता जिताती है। हम जो कुछ भी हैं, मोदी के कारण नहीं, जनता-जनार्दन के कारण हैं। हमें जनादेश मिला है, हमें उस जन का सम्मान करना है और उसके आदेश का पालन करना है। इस देश में बहुत ऐसे नरेन्द्र मोदी पैदा हो गए हैं, जिन्होंने मंत्रिमंडल बना दिया है। जो भी जीतकर आए हैं, सब मेरे हैं। दायित्व कुछ

ही लोगों को दे सकते हैं। सरकार और कोई बनाने वाला नहीं है, जिसकी जिम्मेदारी है वही बनाने वाले हैं। अखबार के पन्नों से न मंत्री बनते हैं और न मंत्रिपरिषद जाते हैं।

ये सरकार गरीबों ने बनाई : वीआइपी कल्चर से देश को नफरत है, एयरपोर्ट पर चेकिंग होती है तो हमें बुरा नहीं लगना चाहिए। लालबत्ती को हटाने में कोई पैसा नहीं लगा, लेकिन इसे हटाने से देश में अच्छा मैसेज गया। महात्मा गांधी का सरल रास्ता है कि आप कोई भी निर्णय करें और आप उलझन में हों तो पल भर में आखिरी छोर पर खड़े व्यक्ति को याद कर सोचें कि आप जो कर रहे हैं, वह उसका भला करेगा या नहीं। 2014 में मैंने कहा था, मेरी सरकार इस देश के दलित, पीड़ित, शोषित, आदिवासी को समर्पित है। मैं आज फिर से कहना चाहता हूं कि पांच साल तक उस मूलभूत बात से अपने आपको ओझल नहीं होने दिया। 2014 से 2019 सकार हमने प्रमुख रूप से गरीबों के लिए चलाई है और

आज मैं ये गर्व से कह सकता हूं कि ये सरकार गरीबों ने बनाई। गरीबों के साथ जो छल चल रहा था, उस छल में हमने छेद किया है और सीधे गरीब के पास पहुंचे हैं। देश पर इस गरीबी को जो टैग लगा है। उससे देश को मुक्त करना है। गरीबों के हक के लिए हमें जीना-जूझना है, अपना जीवन खपाना है। संविधान को साक्षी मानकर हम संकल्प लें कि देश के सभी वर्गों को नई ऊंचाइयों पर ले जाना है। पंथ-जाति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए।

हम बहुत कुछ करने के लिए आए हैं : हम सबको मिलकर के 21वीं सदी में हिंदुस्तान को ऊंचाइयों पर ले जाना है। सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास ये हमारा मंत्र है। स्वच्छता अगर जन आंदोलन बन सकता है तो समृद्ध भारत भी जन आंदोलन बन सकता है। हम कुछ करने के लिए नहीं, बहुत कुछ करने के लिए आए हैं। 21वीं सदी भारत की सदी बने, ये हम लोगों का दायित्व है। जिस समाज में एस्पिरेशन नहीं होता है, वो समाज कुछ भी नहीं कर सकता है। विश्व एक ऐसे त्रिकोण पर खड़ा है, जहां विश्व को भारत से बहुत सारी अपेक्षाएं हैं। आप सबने मुझे दायित्व दिया है, लेकिन ये कोई कांटैक्ट नहीं है, ये हमारी संयुक्त जिम्मेदारी है। चोट झेलने की जिम्मेवारी मेरी है, सफलता का हक आपका है, भारत का संविधान हमारे लिए सर्वोपरि है। ■ (दैनिक जागरण से साभार)

मोदीजी के नाम पर मिला देशव्यापी समर्थन : अमित शाह

संसद के सेंट्रल हॉल में राजग की बैठक में भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने चुने हुए सभी सांसदों का स्वागत करते हुए सभागार में अपने संबोधन में कहा कि कश्मीर से कन्याकुमारी और कामाख्या से कच्छ तक जनता ने मोदीजी के समर्थन में मतदान किया है। 2014 में मिले जनता के समर्थन को याद करते हुए श्री शाह ने कहा कि पांच वर्ष पहले नरेन्द्र मोदी जी को इसी हॉल में नेता चुना गया था। इसके बाद उन्होंने सबका साथ, सबका विकास के नारे को सार्थक करते हुए देश के लोगों के लिए काम किया और आज फिर से उन्हें नेता चुना गया है। उन्होंने कहा कि राजग के 353 सांसदों का चुनकर आना ऐतिहासिक है और प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में देश के 17 राज्यों में 50 फीसद वोट से ज्यादा प्राप्त हुए हैं, जो देश की जनता का आशीर्वाद है।

श्री शाह ने प्रधानमंत्री के कार्यकाल की तारीफ में कहा कि देश भर में चुनाव प्रक्रिया के समय हर जगह मोदी जी की सुनामी दिखाई देती थी और इसी सुनामी ने विपक्षी पार्टियों को ध्वस्त किया है। श्री शाह ने गुजरात के विकास को प्रयोग बताते हुए कहा कि वह इसे नरेन्द्र मोदी प्रयोग कहते हैं जिस पर जनता ने मुहर लगाई है। उन्होंने कहा कि देश का ऐसा शख्स फिर प्रधानमंत्री बनने जा रहा है जिसकी पीढ़ियां राजनीति में नहीं रहीं।

वहीं, प्रधानमंत्री के कार्यकाल में देश में रही मजबूत राष्ट्र नीति पर श्री अमित शाह ने कहा कि जनता के मन में एक टीस थी कि आतंकवाद पर ठोस कार्रवाई नहीं होती। लेकिन प्रधानमंत्री मोदी जी के आने के बाद जनता को विश्वास हुआ कि अब एक नेता ऐसा आया है जो आतंकवादियों के घर में घुसकर कार्रवाई कर सकता है। उन्होंने कहा कि सर्जिकल स्ट्राइक से लोग अचरज में थे, लेकिन इसके बाद पुलवामा में हुए हमले के बाद जो बदला लिया गया, उससे साफ हो गया कि यह देश की सुरक्षा नीति है। श्री अमित शाह ने कहा कि 1990 के बाद देश की सुरक्षा नीति को हलके में लिया जाता था। परिवारवाद, जातिवाद, तुष्टिकरण की राजनीति हावी था, लेकिन जनता ने बता दिया कि जो काम करेगा जनता उसके साथ होगी। ■

कैबिनेट की प्रथम बैठक में लिए गए कई ऐतिहासिक निर्णय

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में 31 मई को एक नई योजना को मंजूरी दी गई। यह ऐतिहासिक निर्णय देश भर के किसानों को सशक्त बनाएगा। यह अग्रणी योजना राष्ट्र को अनाज मुहैया कराने के लिए दिन-रात मेहनत करने वाले हमारे परिश्रमी किसानों को पेंशन की सुविधा उपलब्ध कराएगी। आजादी के बाद यह पहला मौका है, जब किसानों के लिए पेंशन कवरेज की परिकल्पना की गई।

अनुमान है कि प्रारंभिक तीन वर्षों में पांच करोड़ छोटे और सीमांत किसान इससे लाभांवित होंगे। केन्द्र सरकार इस योजना के अंतर्गत परिकल्पित सामाजिक सुरक्षा कवर मुहैया कराने हेतु तीन वर्ष की अवधि के लिए अपने अंशदान के रूप में 10774.50 करोड़ रुपये की राशि खर्च करेगी।

इस योजना की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

- यह देश भर के छोटे और सीमांत किसानों (एसएमएफ) के लिए स्वैच्छिक और अंशदायी पेंशन योजना है।
- इसमें प्रारंभिक आयु 18 से 40 वर्ष है और 60 वर्ष की आयु होने पर 3000 रुपये की न्यूनतम निर्धारित पेंशन देने का प्रावधान है। उदाहरण के लिए लाभार्थी किसान को 29 वर्ष की प्रवेश आयु में 100 रुपये प्रतिमाह का अंशदान करना अपेक्षित है। केंद्र सरकार भी पात्र किसान द्वारा किए गए अंशदान के बराबर राशि पेंशन निधि में जमा कराएगी।

अंशदानकर्ता की पेंशन लेने के दौरान मृत्यु होने के बाद एसएमएफ लाभार्थी की पत्नी/पति परिवार पेंशन के रूप में लाभार्थी द्वारा प्राप्त की जा रही पेंशन की 50 प्रतिशत पेंशन राशि प्राप्त करने के हकदार होंगे। बशर्ते कि वे इस योजना के पहले से ही एसएमएफ लाभार्थी न हों। अगर अंशदानकर्ता की मृत्यु अंशदान अवधि को दौरान हो जाती है तो उसके पत्नी/पति के सामने नियमित अंशदान भुगतान द्वारा योजना को जारी रखने का विकल्प खुला होगा।

योजनाओं के बीच सामंजस्य, किसानों के लिए समृद्धि

इस योजना की दिलचस्प बात यह है कि किसान प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) योजना से प्राप्त लाभ से सीधे ही इस योजना में अपना मासिक अंशदान करने का विकल्प चुन सकता है। एक अन्य विकल्प यह भी है कि कोई भी किसान 'कॉमन सर्विस सेंटर' (सीएससी) के माध्यम से पंजीकरण कराकर भी अपने मासिक

अंशदान का भुगतान कर सकता है।

मुख्य वायदे पूरे किए, कृषि क्षेत्र को बनाया सशक्त

आजादी के 70 साल बाद तक किसानों को इस तरह की कवरेज प्रदान करने के बारे में कभी विचार तक नहीं किया गया। 2019 के संसदीय चुनाव से पहले प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पहली बार इस तरह का विचार सामने रखा, जिसकी प्रतिध्वनि देश भर में सुनाई दी। इस योजना का उल्लेख भारतीय जनता पार्टी के चुनाव घोषणा पत्र में किया गया था और नई सरकार के गठन के बाद कैबिनेट की पहली बैठक में ही इसे साकार कर दिया गया।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना से 14.5 करोड़ किसान होंगे लाभान्वित

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 31 मई को इस आशय की मंजूरी दी कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) योजना के दायरे को व्यापक रूप से बढ़ाया जाएगा। इस निर्णय के साथ ही अब सभी भूमि जोत वाले पात्र किसान परिवार (सामान्य अपवाद मानदंड को छोड़कर) इस योजना से लाभान्वित हो सकेंगे।

संशोधित योजना से लगभग 2 करोड़ और किसानों को कवर किये जाने की आशा है। इससे पीएम-किसान योजना का दायरा बढ़ जाएगा और इसके दायरे में तकरीबन 14.5 करोड़ लाभार्थी आ जायेंगे। वर्ष 2019-20 में केंद्र सरकार द्वारा इस पर अनुमानित 87,217.50 करोड़ रुपये का व्यय किया जाएगा।

किसानों से किया गया एक प्रमुख वायदा पूरा

पीएम-किसान योजना का दायरा बढ़ाने से संबंधित कैबिनेट निर्णय से आम चुनाव 2019 के दौरान देश की जनता से प्रधानमंत्री द्वारा किया गया एक प्रमुख वायदा पूरा हो गया है। भाजपा के चुनाव संकल्प पत्र में भी इस प्रमुख नीतिगत निर्णय का उल्लेख किया गया था।

उल्लेखनीय है कि झारखंड में अद्यतन भूमि रिकॉर्ड उपलब्ध न होने और असम, मेघालय एवं जम्मू-कश्मीर में 'आधार' की कम उपलब्धता जैसे परिचालन संबंधी कुछ मुद्दों को भी हल कर लिया गया।

पीएम–किसान योजना : किसानों के लिए एक ऐतिहासिक आय सहायता

पीएम-किसान योजना का शुभारंभ वित्त वर्ष 2019-20 के अंतरिम बजट में ही कर दिया गया। पीएम-किसान योजना के तहत देश भर में 2 हेक्टेयर तक की खेती योग्य भूमि वाले छोटे एवं सीमांत भूमिधारक किसान परिवारों को प्रति वर्ष 6,000 रुपये की आय सहायता देने का उल्लेख किया गया है (अब इसका दायरा बढ़ा दिया गया है)।

इस योजना के तहत पूरे साल के दौरान प्रत्येक चार महीने में 2,000-2,000 रुपये की तीन किस्तों में यह राशि जारी की जा रही है। यह राशि प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण विधि के माध्यम से लाभार्थियों के निर्दिष्ट बैंक खाते में जमा की जा रही है।

इस योजना का शुभारंभ तीन हफ्तों की रिकॉर्ड अवधि में 24 फरवरी, 2019 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान किया गया था। इस दौरान निर्धारित पहली किस्त अनेक किसानों के बैंक खातों में जमा कर दी गई थी। अभी तक 3.11 करोड़ लाभार्थियों के बैंक खातों में पहली किस्त और 2.66 करोड़ लाभार्थियों के बैंक खातों में दूसरी किस्त सीधे जमा की जा चुकी है।

नए उत्साह के साथ भारत के अन्नदाताओं की सेवा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी भारत के किसानों के लिए बार-बार श्रद्धा के साथ उद्गार व्यक्त करते रहे हैं। उन्होंने भारत के किसानों को हमारे अन्नदाता के रूप में वर्णित किया है, जो 1.3 अरब भारतीयों का भरण-पोषण करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं।

वर्ष 2014 से वर्ष 2019 तक की अवधि के दौरान अनगिनत कदम उठाए गए। 22 फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्यों (एमएसपी) में वृद्धि करना, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, प्रधानमंत्री किसान संपदा योजना और बेहतर बाजारों के लिए ई-नाम इत्यादि इन महत्वपूर्ण कदमों में शामिल हैं।

नई पेंशन योजना से 3 करोड़ खुदरा व्यापारी और दुकानदार लाभान्वित

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 31 मई को व्यापारिक समुदाय को लाभान्वित करने वाले एक महत्वपूर्ण निर्णय के तहत एक नई योजना को मंजूरी दी, जिसके तहत व्यापारी समुदाय को पेंशन कवरेज देने की पेशकश की गई। इस योजना के तहत सभी दुकानदारों, खुदरा व्यापारियों और स्व-रोजगार करने वाले लोगों को 60 वर्ष की आयु हो जाने के बाद 3000 रुपये की न्यूनतम मासिक पेंशन देना सुनिश्चित किया गया है।

सभी छोटे दुकानदारों एवं स्व-रोजगार वाले लोगों के साथ-साथ ऐसे खुदरा (रिटेल) व्यापारी भी इस योजना के लिए अपना नामांकन करा सकते हैं या इससे जुड़ सकते हैं, जिनका जीएसटी कारोबार 1.5 करोड़ रुपये से कम है और जिनकी आयु 18 से 40 वर्ष तक है। इस योजना से 3 करोड़ से भी अधिक छोटे दुकानदार एवं व्यापारी लाभान्वित होंगे।

यह योजना स्व-घोषणा पर आधारित है, क्योंकि 'आधार' एवं बैंक खाते को छोड़कर किसी और दस्तावेज की जरूरत नहीं पड़ती है। इच्छुक व्यक्ति देश भर में फैले 3,25,000 से भी अधिक साझा सेवा केन्द्रों (कॉमन सर्विस सेंटर) के जरिये स्वयं का नामांकन करा सकते हैं या इससे जुड़ सकते हैं।

भारत सरकार इस योजना के सदस्य के खाते में समान योगदान देगी। उदाहरण के लिए, यदि 29 साल की उम्र का कोई व्यक्ति प्रति माह 100 रुपये का योगदान करता है, तो केन्द्र सरकार भी प्रत्येक महीने सम्बन्धित सदस्य के खाते में सब्सिडी के रूप में ठीक उतनी ही राशि का योगदान करेगी। ■

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अनेक राष्ट्राध्यक्षों/ शासनाध्यक्षों के साथ की मुलाकात

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 31 मई को हैदराबाद हाउस में बांग्लादेश के राष्ट्रपति श्री मोहम्मद अब्दुल हामिद से भेंट की। दोनों राजनेताओं ने इस बैठक के दौरान द्विपक्षीय संबंधों की मौजूदा उत्कृष्ट स्थिति पर संतोष व्यक्त किया। भारत के दौरे पर आए राष्ट्रपति ने प्रधानमंत्री शेख हसीना, जो अपनी पूर्व प्रतिबद्धता के कारण निजी तौर पर यहां आने में असमर्थ थीं, की ओर से दी गई बधाई से प्रधानमंत्री श्री मोदी को अवगत कराया।

उन्होंने बांग्लादेश की सरकार की ओर से प्रधानमंत्री श्री मोदी को बांग्लादेश का दौरा करने के लिए दिए गए आमंत्रण से अवगत कराया, जिसे सहर्ष स्वीकार कर लिया गया। प्रधानमंत्री ने यह बात रेखांकित की कि बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम के दौरान बना द्विपक्षीय रिश्ता अब भी भारत की सर्वोच्च प्राथमिकता है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने बंगबंधु शेख मुजीबुर रहमान की जन्म शताब्दी (2020 में) और बांग्लादेश की मुक्ति की 50वीं वर्षगांठ (2021) को समुचित ढंग से मनाने के लिए किए जा रहे संयुक्त प्रयासों के हिस्से के रूप में भारत और बांग्लादेश के आपसी संबंधों को नए मुकाम पर ले जाने की अहमियत पर विशेष जोर दिया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ 31 मई को अपनी द्विपक्षीय बैठक के दौरान नेपाल के प्रधानमंत्री श्री के.पी. शर्मा ओली ने आम चुनाव में प्रधानमंत्री श्री मोदी की पार्टी की प्रचंड जीत पर उन्हें बधाई दी। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने शुभकामनाओं के लिए प्रधानमंत्री श्री ओली का धन्यवाद किया और भारत एवं नेपाल के बीच पारंपरिक रूप से जारी घनिष्ठ एवं बहुआयामी साझेदारी को और मजबूत करने के लिए नेपाल के साथ काम करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

भूटान के प्रधानमंत्री डॉ. लोटे शेरिंग ने 31 मई को अपनी द्विपक्षीय बैठक के दौरान आम चुनाव में हालिया शानदार जीत के बाद पदभार फिर से ग्रहण करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को बधाई दी। उन्होंने भूटान के महामहिम सम्राट के साथ-साथ भूटान की जनता की ओर से भारत के प्रधानमंत्री एवं आम जनता को दी गई शुभकामनाओं से भी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को अवगत कराया। प्रधानमंत्री डॉ. लोटे ने कहा कि वह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और भारत सरकार के साथ मिल-जुलकर निरंतर काम करने को लेकर आशान्वित हैं। इस संबंध में उन्होंने जल्द से जल्द भूटान की यात्रा करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को फिर से आमंत्रित किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने शपथ ग्रहण समारोह में शिरकत करने और शुभकामनाएं देने के लिए भूटान के प्रधानमंत्री का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि भारत भूटान के साथ पनबिजली क्षेत्र में सहयोग सहित अपनी विकास साझेदारी को काफी अहमियत देता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ 31 मई को अपनी द्विपक्षीय बैठक के दौरान मॉरीशस के प्रधानमंत्री महामहिम प्रविंद कुमार जगन्नाथ ने श्री मोदी को एक शानदार जनादेश प्राप्त करने तथा उनके पुनः निर्वाचित होने पर हार्दिक शुभकामनाएं दीं। प्रधानमंत्री मोदी ने मॉरीशस के प्रधानमंत्री जगन्नाथ का धन्यवाद किया और सभी क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय तथा स्थायी संबंधों को और मजबूत करने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया।

श्रीलंका के राष्ट्रपति श्री मैत्रीपाला सिरीसेना ने हाल में सम्पन्न आम चुनावों में भाजपा की अभूतपूर्व जीत के बाद प्रधानमंत्री के रूप में फिर से कार्यभार ग्रहण करने पर 31 मई को श्री नरेन्द्र मोदी को बधाई दी और अपने क्षेत्र में शांति, समृद्धि और सुरक्षा के लिए दोनों देशों के बीच संबंधों को मजबूत करने के लिए मिलकर काम करने की प्रतिबद्धता दोहराई। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने समारोह में उपस्थित होने और उनकी शुभकामनाओं के लिए राष्ट्रपति सिरीसेना को धन्यवाद दिया। उन्होंने श्रीलंका के साथ मैत्रीपूर्ण द्विपक्षीय संबंधों को और आगे ले जाने के प्रति अपनी सरकार का संकल्प दोहराया।

किर्गिस्तान के राष्ट्रपति श्री सूरोनबे जीनबेकोव ने 31 मई को गर्मजोशी से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को बधाई दी और 13-15 जून, 2019 तक होने वाले एससीओ शिखर सम्मेलन तथा एक द्विपक्षीय यात्रा के लिए किर्गिस्तान आने का निमंत्रण दिया। ■

हम लोकतंत्र में विश्वास करने वाले लोग हैं: नरेन्द्र मोदी

लोकसभा चुनाव 2019 में मिली भारी जीत के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी काशी की जनता को आभार जताने 27 मई को वाराणसी पहुंचे और वहां कार्यकर्ताओं संबोधित किया। उन्होंने कहा कि मैं भी भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता होने के नाते पार्टी और कार्यकर्ता जो आदेश करते हैं उसका पालन करने का मैं भरसक प्रयास करता हूं।

श्री मोदी ने कहा कि एक मास पूर्व जब 25 तारीख को मैं यहां था, जिस आन, बान, शान के साथ काशी ने एक विश्व रूप दिखाया था और वो सिर्फ काशी को प्रभावित करने वाला नहीं था, सिर्फ उत्तर प्रदेश को प्रभावित करने वाला नहीं था, उसने पूरे हिंदुस्तान को प्रभावित किया था। हिंदुस्तान का कोई कोना ऐसा नहीं होगा, जो काशी की गलियों में, काशी के मार्ग पर काशी का मिजाज जिस प्रकार से प्रगट हो रहा था, उसे देश के हर कोने में मतदाता देख रहा था।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज हिंदुस्तान के राजनीतिक तख्त पर, राजनीतिक कैनवास पर ईमानदारी से रग-रग में लोकतंत्र को जीने वाला कोई दल है तो भारतीय जनता पार्टी है। हम शासन में आते हैं तब भी हम सबसे ज्यादा लोकतंत्र की परवाह करने वाले लोग होते हैं। कभी-कभी तो और लोग जब सत्ता में आते हैं तो विपक्ष का नामोनिशान नहीं होता है।

उन्होंने कहा कि हमें जब सत्ता मिलती है तो विपक्ष का अस्तित्व शुरू होता है क्योंकि लोकतंत्र ही हमारी स्पिरीट है। आप त्रिपुरा देख लीजिए, मैं देश के पॉलीटिकल पंडितों से कहना चाहूंगा और चुनौती देकर के कहना चाहता हूं। कोई मुझे बताए, त्रिपुरा के अंदर 30 साल कम्युनिस्टों की सरकार रही, क्या वहां कोई विपक्ष था, क्या वहां विपक्ष की कोई आवाज थी, क्या वहां विपक्ष को कभी सुना गया था? क्या दिल्ली के मीडिया में कभी विपक्ष की चर्चा हुई थी?

श्री मोदी ने कहा कि आज त्रिपुरा में हम सत्ता में आए हैं। अभी तो दो साल मुश्किल से होने जा रहे हैं, आज वहां जानदार, शानदार विपक्ष मौजूद है और उसकी आवाज सुनी जाती है। ये लोकतंत्र स्पिरीट है, उसकी आवाज के तवज्जो दी जाती है और देश चलाने के लिए ये अपने आप में बहुत बड़ी बात होती है और जिम्मेवारी भी होती है, वो कोई उपकार नहीं है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि हम विपक्ष की ताकत को स्वीकार करके तवज्जो देने वाले, लोकतंत्र में विश्वास करने वाले लोग हैं और जहां-जहां हमें मौका मिला, वहां पर विपक्ष का आवाज, संख्या भले कम होती हो, जनता के अविश्वास के कारण उनकी जनसंख्या कम हो जाती है, वो उनकी जिम्मेवारी है जनता का विश्वास जीते, लेकिन

संविधान हमें जिम्मेवारी देता है, एक भी क्यों न हो उसकी आवाज का महत्व बड़ा है, ये हमारे जेहन में है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि चुनाव जीतना एक काम है और लोकतंत्र का ये उत्सव आन, बान, शान के साथ हमने मनाया है। लेकिन अब 2022, आजादी के 75 साल, अधिकार की चर्चाएं हमने बहुत कर ली हैं, ये पांच साल कर्तव्य पर हम चल सकते हैं। इस देश का नागरिक अगर अपने कर्तव्यों का पालन करे तो किसी के अधिकारों का हनन होने वाला नहीं है।

श्री मोदी ने कहा कि हम वो लोग हैं जो भारत की महान विरासत को लेकर के गौरव के साथ आगे बढ़ना चाहते हैं, जो काल बाह्य है उसको छोड़ने वाले हम लोग हैं, लेकिन जो सदियों से खरा उतरा है, ऋषियों ने, आचार्यों ने, भगवंतों ने, मजदूर ने, किसान ने, कामगार ने, शिक्षक ने, वैज्ञानिक ने हजारों सालों से देश की परंपरा को विकसित किया है औरों को शर्म आती हो आने दो, मुझे इसका गर्व होता है। जिनको शर्म आती है वो उनकी प्रॉब्लम है। हमें लगता है कि हमारे महापुरुषों ने दुनिया को बहुत कुछ दिया है और जिसकी विरासत भारत के पास है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि हम दो बातों को लेकर चलने का प्रयास करते हैं, एक ये महान विरासत और दूसरा आधुनिक विजन। हमें कल्चर को भी बरकरार रखना है और हमें करंट सिचुएशन को भी एड्रेस करना है। ■

प्रधानमंत्री ने काशी विश्वनाथ मंदिर में पूजा-अर्चना की

वाराणसी में 17 मई को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने काशी विश्वनाथ मंदिर में पूजा-अर्चना की। लोकसभा चुनाव 2019 में मिली भारी जीत के बाद श्री मोदी की यह पहली वाराणसी यात्रा थी। मंदिर में पूजा करते समय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को चुनाव सर्टिफिकेट देता वाराणसी का भाजपा प्रतिनिधिमंडल

14 मई को वाराणसी का भाजपा प्रतिनिधिमंडल प्रधानमंत्री से मिला। प्रतिनिधिमंडल ने शीघ्र संपन्न हुए लोकसभा चुनाव, 2019 में वाराणसी लोकसभा सीट से चुने जाने का ऑफिसियल सर्टिफिकेट प्रधानमंत्री को दिया।

मोदी सरकार 2.0 के शपथ

ग्रहण समारोह की भव्य छवि

राष्ट्रपति भवन में शपथ ग्रहण स

मारोह के समय का विहंगम दृश्य

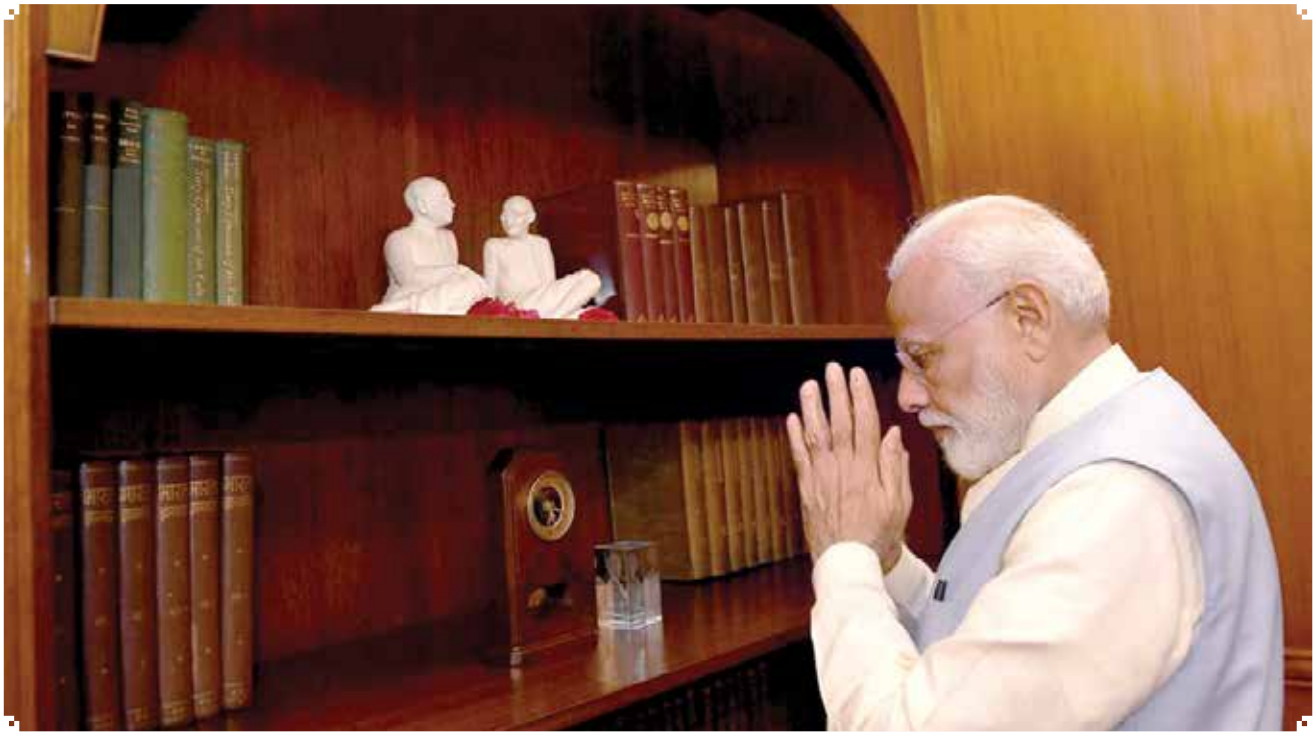

नई दिल्ली में सॉउथ ब्लॉक स्थित प्रधानमंत्री कार्यालय में कार्यभार ग्रहण करने से पहले महात्मा गांधी और सरदार पटेल की मूर्ति को नमन करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

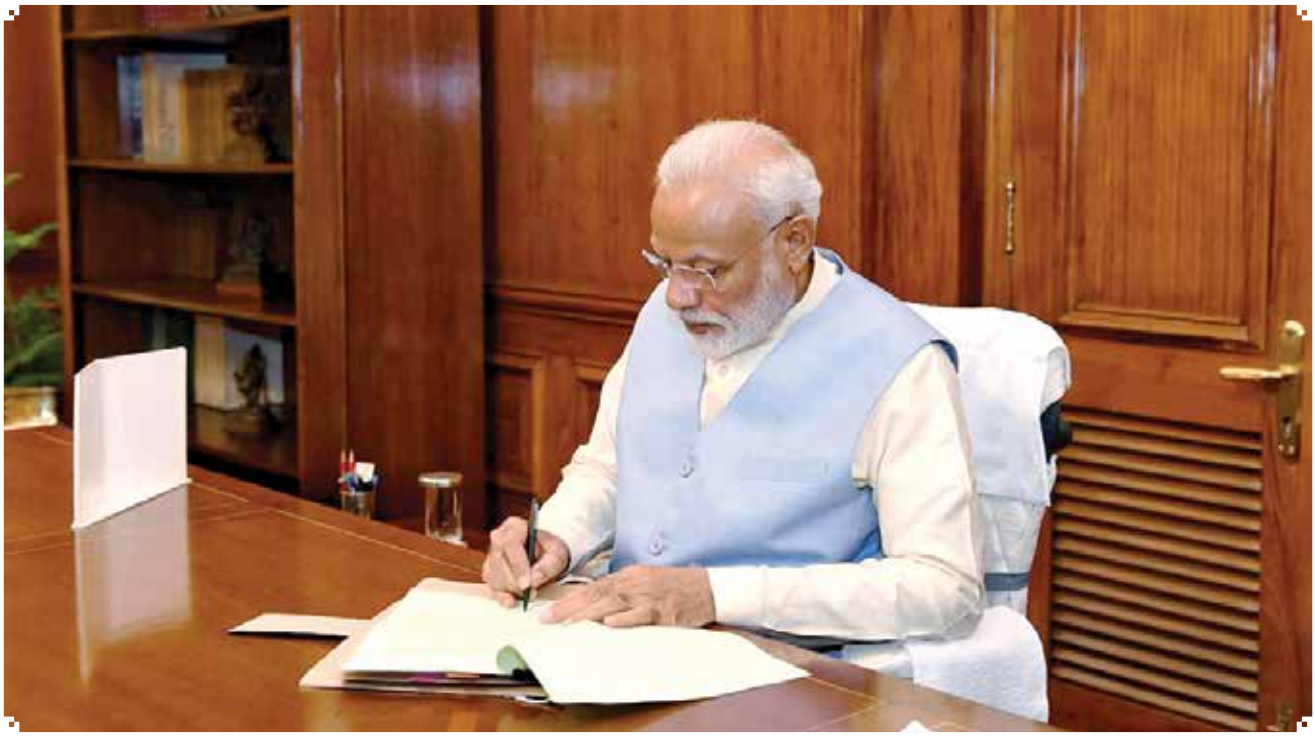

नई दिल्ली में सॉउथ ब्लॉक स्थित प्रधानमंत्री कार्यालय में कार्यभार ग्रहण करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

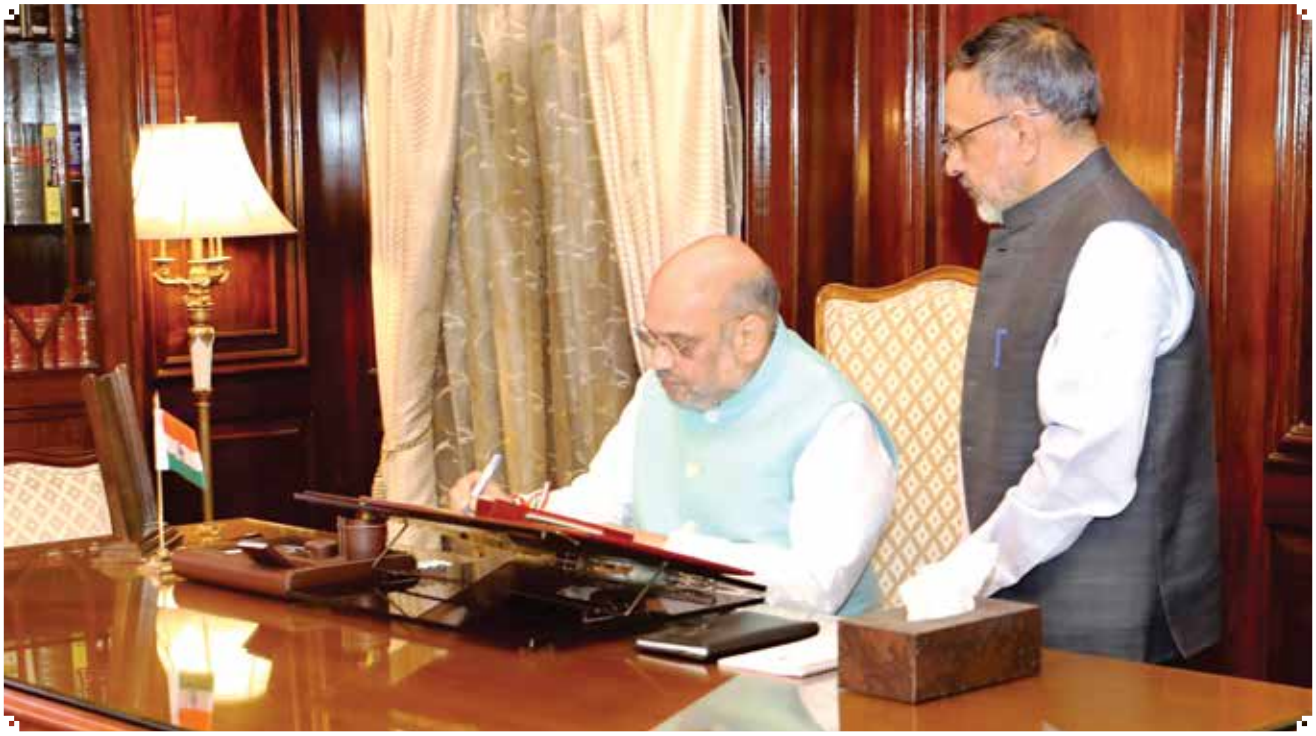

नई दिल्ली में नॉर्थ ब्लॉक स्थित कार्यालय में कार्यभार ग्रहण करते केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह

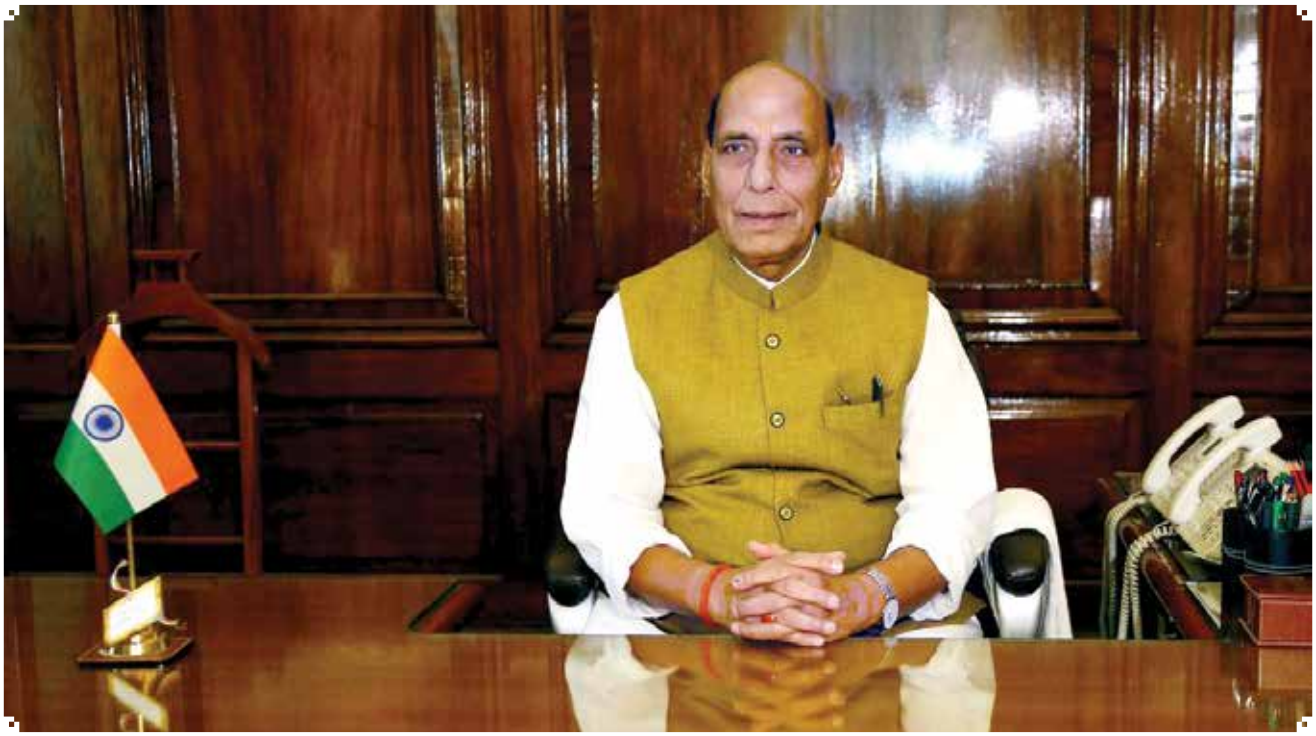

नई दिल्ली में नॉर्थ ब्लॉक स्थित कार्यालय में कार्यभार ग्रहण करते केंद्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह

अगले पांच साल जनचेतना-जन भागीदारी के लिए : नरेन्द्र मोदी

लोकसभा चुनाव में जबरदस्त जीत दर्ज करने के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 26 मई को अपने गृह राज्य गुजरात गए। यहां अहमदाबाद में उन्होंने पहले कार्यकर्ताओं को संबोधित किया, फिर अपनी मां हीराबेन का आशीर्वाद लेने गांधीनगर पहुंचे। यहां उन्होंने अपनी मां के पैर छूकर आशीर्वाद लिया।

श्री नरेन्द्र मोदी ने अहमदाबाद में रैली को संबोधित किया। श्री मोदी ने कहा, 'मैं यहां आपका आशीर्वाद लेने आया हूं। बड़ा जनादेश बड़ी जिम्मेदारियां लाता है। इतनी बड़ी जीत के बाद विनम्र बने रहने महत्वपूर्ण है। गुजरात में भाजपा ने लगातार दूसरी बार सभी सीटों पर जीत दर्ज की। 2019 का चुनाव न भाजपा लड़ी, न मैं लड़ा और न ही कोई और नेता। यह चुनाव देश की जनता ने लड़ा। इस बार सभी राजनीतिक पंडित फेल हो गए। छठे चरण के बाद मैंने कहा था कि हमें 300 से ज्यादा सीटें मिलेंगी। कई लोगों ने मेरा मजाक उड़ाया। चुनावों के दौरान मैंने देखा कि लोगों ने एक मजबूत सरकार बनाने के लिए वोट किया।'

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि आने वाले पांच साल जनचेतना और जन भागीदारी के जरिये विश्व में भारत की खोई हुई ताकत वापस लाने के लिए हैं। 1942 से 1947 की तरह ही आने वाले पांच साल देश के लिए काफी अहम हैं। हमें इन पांच वर्षों का इस्तेमाल जनता की समस्याओं को हल करने और देश के सर्वांगीण

विकास के लिए करना है। हमें मिलकर देश को विश्व स्तर पर और आगे बढ़ाना होगा।

श्री मोदी ने कहा कि 2014 के चुनावों में लोगों को गुजरात के विकास के बारे में पता चला। इन चुनावों से पहले मुझे कोई नहीं जानता था, लेकिन गुजरात के विकास की चर्चा हर जगह होती थी। मैंने सोशल मीडिया पर एक वीडियो देखा, जिसमें पश्चिम बंगाल की एक महिला मोदी-मोदी कह रही है। जब इस बारे में पूछा गया तो जवाब मिला कि मैं गुजरात गई, मैंने वहां विकास देखा। ऐसा ही विकास में पश्चिम बंगाल में चाहती हूं। लेकिन जब महिला से पूछा गया कि वोट किसे देंगी तो उसने कुछ नहीं कहा।

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की तारीफ की। उन्होंने कहा, दुनियाभर में मोदी-मोदी हो रहा है। पूरे विश्व में 125 करोड़ भारतीयों का मान बढ़ा है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक विकास नजर आ रहा है। कभी गुजरात में यात्रा निकालने से डर लगता था। मोदीजी के आने के बाद गुजरात में दंगा खत्म हो गया।

श्री शाह ने कहा, लोग यहां हमारा स्वागत करने आए हैं, लेकिन हमें सूरत में अग्निकांड के दौरान जिंदगी खोने वाले 22 बच्चों को श्रद्धांजलि देनी चाहिए। हमें उनके और उनके परिवार के लिए भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए। ■

हमारी विचारधारा है 'राष्ट्र प्रथम': रामलाल

लोकसभा चुनाव 2019 में लोगों द्वारा दिए गए भारी जनादेश ने न केवल प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा के नेतृत्व में लोगों के अपार विश्वास को प्रकट किया है, बल्कि देश बहुत आशाओं और उम्मीदों के साथ मोदी सरकार के नेतृत्व में सुनहरे भविष्य की ओर अग्रसर है। बड़े पैमाने पर जनादेश ने राजनीतिक विश्लेषकों को स्तब्ध कर दिया है और वे अभी भी उसका विश्लेषण करने के लिए जूझ रहे हैं कि आखिर भाजपानीत एनडीए की इतनी बड़ी जीत कैसे हुई। वहीं विपक्ष औंधे मुंह गिरा। भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) श्री रामलाल ने कमल संदेश के कार्यकारी संपादक डॉ. शिव शक्ति बक्शी के साथ एक साक्षात्कार में आगामी दिनों में भाजपा की संगठनात्मक योजनाओं और मोदी सरकार के लक्ष्यों के साथ इस विशाल जनादेश के विभिन्न पहलुओं और इसके प्रभावों पर विस्तार से बातचीत की। प्रमुख अंशः

लोकसभा चुनावों में जनता द्वारा भाजपा एवं राजग को भारी जनादेश के लिए बहुत–बहुत बधाई। क्या कारण है कि जनता ने श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा को इतना भारी जनादेश दिया है?

श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा को इतनी बड़ी सफलता मिलने का एक महत्वपूर्ण कारण है जनता का नेतृत्व में भरोसा। भरोसा राष्ट्र के सम्मान का, राष्ट्र की सुरक्षा का, राष्ट्र के विकास का, गरीबों के कल्याण का, पारदर्शी शासन का, ईमानदारी का, जनता के हित में संवेदनशीलता का, कठोर फैसलों का तथा भारत को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाने का। 5 वर्षों में सरकार ने बिना भेदभाव के 'सबका साथ, सबका विकास' की भावना से

बिना थके, बिना रुके लोगों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने का कार्य किया है।

जिनके घर में बिजली पहुंची है, गैस पहुंची है, शौचालय पहुंचा है, कच्चे घर की जगह पक्का घर पहुंचा है, आयुष्मान भारत के अंतर्गत 5 लाख का स्वास्थ्य बीमा पहुंचा है, मजदूरों को पेंशन पहुंची है, किसानों के खाते में सम्मान निधि पहुंची है, युवाओं को मुद्रा लोन पहुंचा है, उन सबको लगा कि यह सब मुमकिन हो पाया क्योंकि मोदी जी हैं। मोदी जी हमारे हैं, हमारे लिये हैं। भाजपा को 32 प्रतिशत वोट अधिक मिले हैं। पहले से 5 करोड़ से अधिक वोट मिले हैं।

2014 के लोकसभा चुनाव के बाद ही राजनैतिक विश्लेषक यह कहने लगे थे कि 2019 में 2014 की सफलता को दोहराना कठिन होगा। परंतु 2019 में 2014 से भी बड़ी सफलता मिली– यह कैसे संभव हुआ?

2014 में आशा थी कुछ होगा। 2019 में आशा आकांक्षा में बदल गई कि हमें नई ऊंचाई को छूना है। इसलिए लोगों ने निरंतरता का विचार किया। अन्य दलों का नेतृत्व न तो विश्वसनीय लगा न ही गम्भीर। जिस हल्की भाषा का प्रयोग देश के प्रधानमंत्री के लिए किया गया वह भारतीय मन को भा ही नहीं सकता था। लोगों ने उनके 'टेप रिकॉर्ड' को नहीं 'ट्रैक रिकॉर्ड' को देखा। यह भरोसे लायक नहीं था। इतना ही नहीं हमारी और अन्य दलों की प्रदेश सरकारों में भी इस अंतर को लोगों ने साफ तौर पर अनुभव किया।

देश की समझदार जनता ने देखा कि विरोधी दल वंशवाद, जातिवाद, तुष्टीकरण से बाहर नहीं निकल पा रहे। यह जनादेश लोकतंत्र की इन बुराइयों के विरुद्ध भी था। लोगों ने Politics of performance को चुना। पहली बार चुनी हुई सरकार को Pro-incumbency जनादेश मिला। यह राजनीति की बुराइयों को नकार कर सकारात्मक जनादेश है। अच्छे नेता, अच्छी सरकार, अच्छे देश के लिए।

भाजपा एक विचारधारा आधारित दल तो है ही, साथ ही यह अपने सांगठनिक विशिष्टता के लिए भी जानी जाती है। संगठनात्मक स्तर पर किस प्रकार की कार्य–योजना से भाजपा एक विशिष्ट संगठन बन गई है?

निश्चित ही भाजपा अपने जन्मकाल से ही विचारधारा पर चलने वाली पार्टी मानी जाती है। हमारी विचारधारा है 'राष्ट्र प्रथम' (Nation First) इसी कारण हमें राष्ट्रवादी कहा जाता है। हमने 1951 से लेकर आज तक अनेक ऐसे मुद्दों पर आंदोलन किये हैं, जिनका संबंध राष्ट्र की एकता–अखंडता से रहा है। राष्ट्रीय स्वाभिमान से रहा है। हमने हमेशा Agenda set किया है। प्रारंभ में राष्ट्र की सुरक्षा का, 70 के दशक में लोकतंत्र की रक्षा का, 80 के दशक में संस्कृति की सुरक्षा का, 90के दशक में राष्ट्रीय स्वाभिमान की रक्षा का, इसके पश्चात् हमारी यात्र का पड़ाव बना सुशासन, विकास व गरीब कल्याण।

पं. दीनदयालजी के अंत्योदय (अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का उत्थान) के सिद्धांत को आज हमारी सरकारें साकार कर रही हैं।

नई सरकार से पूरे देश की आशाएं एवं अपेक्षाएं जुड़ी हुई हैं। आने वाले दिनों में किस प्रकार का परिवर्तन हम देश में देख सकते हैं?

निश्चित ही हमने विचारधारा के साथ पार्टी को कार्यकर्ता आधारित बनाया। संगठन का विस्तार भी किया। उसे व्यवस्थित भी किया। सभी स्तर पर प्रशिक्षण की श्रृंखला, विभिन्न स्तर की बैठकों का व्यवस्थित क्रम, मोर्चा/प्रकोष्ठ/विभाग व प्रकल्पों के माध्यम से समाज के सभी वर्गों तक पहुंच व उनकी सहभागिता। आपको स्मरण होगा कि 2014 की जीत के पश्चात् जहां श्री मोदी जी ने जीत का श्रेय जनता के आशीर्वाद को दिया, वहीं उन्होंने कहा कि यह जीत मेरे **बूथ के कार्यकर्ताओं** को समर्पित है। इस बार भी उन्होंने जनता के साथ इस जीत में बूथ पर काम करने वाले **पन्ना प्रमुख के प्रयासों** की चर्चा की। सर्वोच्च नेता के द्वारा जब सबसे छोटी इकाई को श्रेय दिया जाये तो आप समझ सकते हैं कि छोटे–से–छोटे कार्यकर्ता का मनोबल कितना बढ़ेगा।

कहीं भी किसी कार्यकर्ता के साथ कोई घटना हो जाये, वह केरल में हो या बंगाल में या और कहीं, पूरी पार्टी में हलचल होती है। हर एक को लगता है कि कोई मेरा अपना चला गया।

यह पारिवारिक भाव हमारी बड़ी ताकत है। हमने आधुनिक तकनीक से भी सबको जोड़कर रखा। हर स्तर पर व्हाट्सअप ग्रुप बनाए तथा कॉल सेंटर व ऑडियो/वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से नीचे से ऊपर तक सजीव सम्पर्क बना रहा। सूचना ऊपर से नीचे जा रही थी तथा फिडबैक नीचे से ऊपर आ रहा था। उस अनुसार सुधारात्मक उपाय भी साथ–साथ चल रहे थे। सोशल मीडिया के द्वारा कंटेंट उपलब्ध कराया जा रहा था। साथ ही विरोधियों के आरोपों का सटीक उत्तर भी दिया जा रहा था। विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से कार्यकर्ता लगातार सक्रिय बना रहा तथा समाज से सम्पर्क भी करता रहा।

कार्यकर्ताओं का उत्साह, जनता से संवाद तथा वातावरण निर्माण के उद्देश्य से कार्यक्रमों की रचना की गई।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित भाई शाह के नेतृत्व में पूरी टीम ने पूरी लगन व मेहनत से सफलता को यहां तक पहुंचा दिया। श्री अमित शाह की एक कुशल रणनीतिकार व विपरीत परिस्थितियों में भी योद्धा की तरह कार्य करने वाले की छवि बनी।

केन्द्र, प्रांत, लोकसभा व विधानसभा स्तर तक संचालन समितियों के माध्यम से कुशल चुनाव प्रबंधन पूरी कसावट के साथ हुआ। भाजपा के हर कार्यकर्ता को लगता है कि यहां उसे कहीं भी पहुंचने का अवसर है। बूथ पर काम करने वाला राष्ट्रीय अध्यक्ष हो सकता है तथा संगठन का काम करते हुए अपनी प्रतिभा का विकास करते हुए विधायक, सांसद, मुख्यमंत्री व प्रधानमंत्री बन सकता है।

इसलिए यहां सभी एक दूसरे से जुड़कर, एक दूसरे पर विश्वास रखकर कार्य करते हैं। यह भावना ही भाजपा संगठन को विशिष्ट भी बनाती है तथा हर परिस्थिति में सफलता प्राप्त करने का विश्वास भी देती है।

आशा, अपेक्षा व आकांक्षा सरकार बनने का बड़ा आधार है। निश्चित ही मा. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में नई सरकार पूरी गति से आगे बढ़ेगी। स्पीड व स्केल इस सरकार की पहले भी विशेषता रही है, आगे भी रहेगी। यह सरकार मात्र स्वप्न दिखाने वाली नहीं सपनों को पूरा करने वाली सरकार है।

लोगों को मूलभूत सुविधाएं मिलें, सुगमता से मिलें, उनको कार्य करने तथा जीवन में आगे बढ़ने के अवसर मिलें, प्रति व्यक्ति आय बढ़े, गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा व स्वास्थ्य मिले, भारत अपनी गौरवपूर्ण सांस्कृतिक परम्पराओं के साथ दुनिया में सुरक्षित व सम्मानित राष्ट्र के रूप में खड़ा होगा यह विश्वास है। नया भारत 'न्यू इंडिया' यानी सुरक्षित, स्वाभिमानी, सम्मानित व समृद्ध भारत।

निश्चित ही भाजपा अपने जन्मकाल से ही विचारधारा पर चलने वाली पार्टी मानी जाती है। हमारी विचारधारा है 'राष्ट्र प्रथम' (Nation First) इसी कारण हमें राष्ट्रवादी कहा जाता है। हमने 1951 से लेकर आज तक अनेक ऐसे मुद्दों पर आंदोलन किये हैं, जिनका संबंध राष्ट्र की एकता–अखंडता से रहा है। राष्ट्रीय स्वाभिमान से रहा है। हमने हमेशा Agenda set किया है। प्रारंभ में राष्ट्र की सुरक्षा का, 70 के दशक में लोकतंत्र की रक्षा का, 80 के दशक में संस्कृति की सुरक्षा का, 90के दशक में राष्ट्रीय स्वाभिमान की रक्षा का, इसके पश्चात् हमारी यात्र का पड़ाव बना सुशासन, विकास व गरीब कल्याण।

देश में भाजपा से भी जन–जन की अपेक्षाएं जुड़ गई हैं। कई नए प्रदेशों में भाजपा का जनसमर्थन बहुत बढ़ रहा है– इसके लिए संगठनात्मक स्तर पर भाजपा की क्या योजना है?

भाजपा संगठन व सरकार के स्तर पर पूरे समन्वय के साथ जनसेवा में अपने को समर्पित करते हुए निश्चित ही जन–जन की आकांक्षाओं की पूर्ति का सशक्त माध्यम बनेगी।

हमारे लिये राजनीति सुविधा नहीं सेवा है। अधिकार नहीं कर्तव्य है। सत्ता भोग नहीं साधना है।

जहां हमारा संगठन अभी मजबूत नहीं हुआ है, वहां पूरी ताकत से जुटकर मजबूत करेंगे। जहां हम मजबूत हैं वहां भी और आगे बढ़ने की सोचेंगे। सफलता हमारे लिये आराम का नहीं, परिश्रम की पराकाष्ठा करने का विषय है। सफलता से मिली जिम्मेदारी को एक–एक कार्यकर्ता समझता है। हमारा **सदस्यता अभियान** प्रारम्भ हो रहा है। इसे लेकर हम समाज के सभी वर्गों तक तथा देश के हर कोने तक पहुंचेंगे। साथ ही, सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से भी जन–जन को जोड़ने का कार्य करते हुए हर बूथ पर जागरूक, जिम्मेदार, जवाबदेह एवं सशक्त संगठन व समाज खड़ा करने में सफल होंगे।

हम सभी का एक ही लक्ष्य है– दुनिया बोले **भारत माता की जय।**

लक्ष्य तक पहुंचे बिना, पथ में पथिक विश्राम कैसा।
आज पहले से निकट है, देख लो यह लक्ष्य अपना।।
पग बढ़ाते ही चलो बस, सत्य होगा शीघ्र सपना।
लक्ष्य प्रेरित बाण हैं हम, ठहरने का काम कैसा।। ■

लद गए अब महाराजा और राजा के दिन

प्रभात झा

मध्य प्रदेश की सरकार अल्पमत में है। 11 दिसंबर 2018 को मध्य प्रदेश का परिणाम आया था। कांग्रेस को 114 और भाजपा 109 विधानसभा की सीटें मिली थी। "नंबर गेम" के कारण बिना किसी जोड़-तोड़ के भाजपा के तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अपने पद से इस्तीफा राज्यपाल को सौंप दिया। कमलनाथजी की लंगड़ी सरकार ने शपथ ली। अभी मात्र 6 माह हुए थे। लोकसभा का चुनाव आया। जनता-जनार्दन के सहयोग से 6 माह के भीतर कमलनाथ की सरकार विश्वास खो चुकी। पूरे देश को आश्चर्य लगा कि 29 लोकसभा सीटों में से कांग्रेस मात्र 1 सीट जो स्वयं कमलनाथ की रही है, वह बचा पायी। बाकी 28 लोकसभा सीटों पर भाजपा के प्रत्याशी विजयी हुए।

स्थिति जब विधानसभावार देखी गयी तो पाया गया कि मध्य प्रदेश की 230 विधानसभा की सीटों में से भाजपा इस लोकसभा में 219 सीटों पर विजयी रही। भाजपा को यह विशाल जनादेश पूर्व में कभी नहीं मिला।

2014 में भी भाजपा को 29 लोकसभा सीटों में से 27 लोकसभा सीटें मिली थी। मध्य प्रदेश जब एक था, तब सन 1977 में जनता पार्टी को 40 लोक सभा सीटों में से 39 सीटें मिली थी। उस समय भी मात्र छिंदवाड़ा सीट ही थी, जो जनता पार्टी नहीं जीत पाई। 2019 के चुनाव में भी यही रहा। भाजपा ने सभी 28 लोकसभा सीटें जीती, पर छिंदवाड़ा मात्र 36 हजार से रह गयी।

मध्य प्रदेश के परिणामों पर एक नजर डालते हैं तो प्रदेश के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की सभी सीटों पर भाजपा ही जीती है। 10 में 1 भी सीट कांग्रेस को नहीं मिली है। दूसरी सबसे बड़ी बात मध्य प्रदेश के गरीबों ने गरीबी की चिंता नहीं की, उन्होंने राष्ट्र भक्ति के ज्वार में डूबकर पूरी तरह से मोदीजी पर अपना विश्वास जताया। प्रदेश के किसान और नौजवानों ने भी मोदीजी पर ही अपना विश्वास जताया। मात्र 6 माह में ही कमलनाथ की लंगड़ी सरकार अपना पूरा जनादेश खो चुकी। भारत में अब झूठ के आधार पर कोई चाहे कि वह सरकार चला लेंगे और पुनः सरकार बना लेंगे, तो यह सिर्फ स्वयं का मुगालता हो सकता है, जनता का नहीं।

मध्य प्रदेश के परिणामों पर एक नजर डालते हैं तो प्रदेश के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की सभी सीटों पर भाजपा ही जीती है। 10 में 1 भी सीट कांग्रेस को नहीं मिली है। दूसरी सबसे बड़ी बात मध्य प्रदेश के गरीबों ने गरीबी की चिंता नहीं की, उन्होंने राष्ट्र भक्ति के ज्वार में डूबकर पूरी तरह से मोदीजी पर अपना विश्वास जताया। प्रदेश के किसान और नौजवानों ने भी मोदीजी पर ही अपना विश्वास जताया।

कमलनाथ सरकार कोई अपने नेककर्मों और संघर्ष से नहीं बनी थी। यह बात पूरे देश और मध्य प्रदेश की जानकारी में है। भाजपा स्वयं कुछ सीटों पर निर्णय लेने में देर कर चुकी थी और कुछ निर्णय जनता के मनोनुकूल नहीं हुए। इस कारण मात्र पांच -छः सीटों से भाजपा की सरकार नहीं बनी।

यदि मध्य प्रदेश की राजनैतिक गहराई में जाएंगे तो देखने में आएगा कि कमलनाथजी सिर्फ छिंदवाड़ा के सांसद बने रहकर ही काम करने की रुचि रखते थे। उन्होंने कभी प्रयास भी नहीं किया कि वह मध्य प्रदेश के नेता बन जाएं। वे तो स्वयं संजय गांधी के मित्र के नाते मध्य प्रदेश में उपकृत हुए और वे गांधी परिवार की सदैव चिंता करते रहे। स्थिति यह रही कि लोग पूरे मध्य प्रदेश में यह कहते रहे कि कमलनाथ 'सांसद' सिर्फ अपने व्यवसाय की सुरक्षा के लिये ही बने रहना चाहते हैं। वे आज भी व्यवसायी मानसिकता से ही मध्य प्रदेश सरकार को अपना निजी फर्म मानकर चला रहे हैं।

कमलनाथजी की सरकार को यह पता ही नहीं चला की मध्य प्रदेश में सम्पूर्ण भारत की तरह मोदी की सुनामी चल रही है। उनका अवलोकन था कि वह अपने 6 माह के कार्य पर लोकसभा में 10-12 सीटें जीत जाएंगे।

जबकि सच्चाई यह है की मोदी लहर के साथ साथ मात्र 6 महीने में कमलनाथजी बतौर मुख्यमंत्री असफल हो चुके और जनता ने ठान लिया की इनको अबकी सबक सिखाना है। जनता से, किसान से, बेरोजगार से झूठ बोलकर लंगड़ी सरकार बनाने वाले

शेष पृष्ठ 41 पर

मोदी 2.0: सत्ता की परिभाषा बदलनेवाला जनादेश

डॉ. विनय सहस्त्रबुद्धे

सत्रहवीं लोकसभा की मतगणना 23 मई को संपन्न हुई। दोपहर तक आए परिणामों द्वारा नरेन्द्र मोदी सरकार की पुनर्स्थापना होगी, यह स्पष्ट हो गया था। प्रधानमंत्री कौन होंगे? इस अहम मुद्दे के उपरान्त भी कई और बिंदु इस लोकसभा चुनाव में निर्णायक साबित हुए। प्रश्न नेतृत्व का भी था। वैश्विक राजनितीक पटल पर भारत द्वारा निर्गमित निरंतर तथा वैशिष्टयपूर्ण भूमिका का था। भ्रष्ट्राचार निर्मूलन के लिए आवश्यक गढ़ी हुई राजनैतिक इच्छाशक्ति टिके रहेना का था। अपितु मतपेटी की पुरानी विघातक राजनीति की ओर फिर से मुड़ने का, या विकास के राजपथ पर निरंतरता और दृढ़ता से चलने का भी था। उपरान्त सारे प्रश्नों पर मतदाताओं द्वारा लिया गया निर्णय 23 मई की संध्या तक स्पष्ट हो गया था। केवल सत्ता परिवर्तन न होकर परिवर्तन के प्रति विश्वास अर्जित किए गए लोग ही सत्ता में वापस आएंगे यह स्पष्ट था।

लंबे समय के बाद वर्तमान सरकार की पुनःस्थापना के लिए व्यापक जनादेश प्राप्त किया जा सकता है, इस चुनाव से यह बात सिद्ध हुई। भारतीय राजनीति में 'एन्टी इन्कम्बसी' के मुद्दे का प्रचलन कई बार अनुभव किया गया है। इस चुनाव में 'मोदी ही चाहिए' इस उत्कटता भरी जनभावना, उमंग और ताकत को जनादेश में परावर्तित होने का अनुभव हुआ। इस प्रकार के जनादेश का अनुभव पंडित नेहरु, इंदिरा गांधी, वाजपेयी तथा डॉ. मनमोहन सरकार ने भी किया था। नेहरु युग में मतदाता सन्मुख कोई विकल्प न था। 1971 की युद्ध विजय की सरकारानुकूल जनभावना को इंदिराजी ने माहिरता से मध्यवर्ती चुनावों द्वारा उपयोग में लाया था। अटल सरकार ने 1999 में जनादेश की प्राप्ति का पुनः अनुभव किया था, किंतु उनके ऊपर पूर्व में किए गए कामकाजों का बोज न था। 2009 में मनमोहन सरकार को पुनर्जनादेश मिला था। अपितु वह 2019 की मोदी सरकार जितना निःसंदेह और मजबूत न था।

'नरेन्द्र मोदी सरकार की रिपोर्ट कार्ड' यह प्रमुख चुनावी बने मुद्दे ने भारतीय राजनीति का व्याकरण ही बदल दिया है। इस चुनाव में अनुभव की हुई जनचर्चा में (पब्लिक डिसकोर्स) राजनीति की दिशा बदलने का सामर्थ्य भी दिखाई दिया है। जाति-धर्म, संप्रदाय भांति विदिर्ण अस्मिता के मुद्दे से उठकर विकास का मुद्दा दृष्टिगोचर हो रहा था। अस्मिता के मुद्दे को सीमापार करना इतना सरल नहीं होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में इन मुद्दों का अपना प्रभाव होता है। फिर भी इन सारे मुद्दों से ऊपर उठकर 'देशभक्ति और विकास' इन दो विचार क्षेत्रों के अद्भुत रसायन ने चुनाव का माहौल भावभूत हुआ था।

'देशभक्ति' और 'राष्ट्रवाद' के मुद्दों की व्यापक चर्चा भी हुई। विकास के मुद्दे के इर्द-गिर्द बहस भी हुई। लेकिन जिन 'आकांक्षी वर्गों' ने 'विकास' का अनुभव किया था, उनकी चेतना इस चुनाव में अदृश्य लहर साबित हुई। उज्ज्वला, प्रधानमंत्री आवास योजना, शौचालय निर्माण अनुदान, घर-घर बिजली पहुंचाने वाली सौभाग्य योजना आदि योजनाओं के व्यापक और असरदार अमल से सामान्य जनों के हृदय में मोदी सरकार की जगह बन गई थी। इस वास्तविकता को कोई बदल भी नहीं सकता था।

देश के सर्वोच्च नेतृत्व की अनित्य परिश्रमशीलता, प्रशासनिक कार्यों का तुरन्त निपटारा, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनोखी कार्यसिद्धि इससे भी परे मोदीजी का प्रामाणिक संकल्प इन सारे बिंदुओं से मोदीजी के नेतृत्व पर जनता का विश्वास अविचलित हो गया था। राफेल के अपप्रचार के बावजूद भी जनता का प्रधानमंत्री मोदीजी की प्रामाणिकता पर भरोसा अटल, अनिश्चल रहा। यह भी इस चुनाव की विशेषता थी।

उपलब्ध कार्यों की विरासत समेटकर नरेन्द्र मोदी फिर एक बार प्रधानमंत्री की कुर्सी पर आसनस्थ हुए है। नई पारी में उनके सन्मुख डटी हुई चुनौतिओं का सामना इतना आसान भी नहीं है। विकास का मुद्दा सरकार की झोली में डालकर जनता चैन से बैठ नहीं सकती। जनता की सम्मुच्च भागीदारी के बिना विकास संभव नहीं, इसका स्पष्ट आकलन स्वयं प्रधानमंत्रीजी के पास है। जनता की तेजी से उभरी हुई आकांक्षाओं की सीढ़ी सरकार को बड़ी कल्पकता से पकड़कर रखनी होगी। आयुष्यमान भारत योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना आदि महत्तम योजनाओं को आवश्यक सुधार के साथ प्रभावी रूप से क्रियान्वित करना, यह चुनौती का विषय है। किसानों की उपज को समर्थन मूल्य से ज्यादा मुआवजा मिलना और साथ-साथ मध्यमवर्ग को महंगाई की आंच न लगना, नागरी जीवन की आवश्यकताओं में गुणवत्ता से सुधार लाना और उसे समय पाबंद पूरा करना, घुसपैठी और आतंकवाद को काबू में रखने के पूर्वानुभव को अनित्य रखना इस प्रकार की अनेक चुनौतियां सरकार सन्मुख है। हर्ष की बात यह है कि नेतृत्व इन सारी बातों से भली-भांति परिचित है।

एक तरफ अमेरिका का दबाव और दूसरी तरफ इरान के साथ रहे हमारे सामरिक महत्वपूर्ण संबधों को दृढ़ बनाने की आवश्यकता, इन दोनों परिस्थितियों से समाधान निकालते हुए सरकार ने अभी तक पेट्रोलियम पदार्थों की बढ़ती कीमतों की चुनौती को स्वीकार तो

कर लिया, अपितु यह एक स्थायी चुनौती ही रहेगी। इसके अतिरिक्त वैश्विक अर्थव्यवस्था के अन्य उतार-चढ़ावों का सामना करते हुए सकल घरेलू उत्पाद का विकास दर चढ़ते क्रम में रखना यह भी एक चुनौती ही है।

प्रजातंत्र में 'मीडिया' की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इस मीडिया विश्व नें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार स्थापित होने का स्वागत किया है, फिर भी उसमें विशाल हृदयता तथा खुले मन की कमी दिखाई देती है। मीडिया जगत की भूमिका अधिक पक्षपातरहित कैसे हो सकती है? इसका समाधान ढूंढने की चुनौती भी नए सरकार के सामने है।

प्रधानमंत्री ने संसद के केंद्रीय सभागृह में किए हुए भाषण में अल्पसंख्यक समूहों का विश्वास प्राप्त करने पर भी काफी जोर दिया था। विश्वास प्राप्त करने का यह कार्य जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही वह जटिल और कठिन भी है। कट्टरतावाद की मोहिनी उच्च विद्या विभूषित व्यक्ति को भी सहजता से अपने वश में कर लेती है और उसमें से आतंकवाद फैलता है यह सत्य विश्वभर में हुई अनेक घटनाओं से सामने आया है। इसलिए शिक्षा का व्यापक प्रसार, विकास के अवसरों की पर्याप्त उपलब्धता, युवाओं का प्रबोधन आदि रुढ़ समाधानों से आतंकवादी प्रवृत्तियों को नष्ट करना आसान नहीं रहा। उसके लिए अधिक कल्पकता और प्रभाव से भरी उपाय-योजनाएं करनी होगी। यह सब करते हुए विकास के पथ पर बना हुआ विश्वास और अधिक व्यापक करना होगा। विकास ही केवल हमारा मुक्तिदाता है यह चेतना दूर तक फैलानी होगी।

जातिवाद, भ्रष्टाचार, स्वच्छ भारत अथवा कानून का सम्मान, परिवेश की रक्षा आदि कुछ विषय ऐसे है, जिसमे सरकार के साथ-साथ जनता ने स्वयं के आचरण और विचारों के स्तर पर इन मुद्दों के उपर कार्य नहीं किया, तो इन चुनौतियों का सामना करना कठीन है। यही कारण रहा है कि मोदीजी ने जनसहभागिता के सिद्धांत को निग्रह से अग्रेषित किया है। अपितु यह प्रत्यक्ष रूप में लाना निश्चित ही आसान नहीं है। गैस ग्राहक और रेल यात्रियों को सब्सिडी छोड़ने की अपील सफलता से किए हुए प्रधानमंत्री भलिभांति यह जानते है कि जनता के व्यवहार में बदल लाए बिना उनकी रग-रग में बसी हुई आदते बदलेंगी नहीं। ऊंचे स्वर में 'भारत माता की जय' की घोषणा देनेवाले युवकों को अपनी ही पवित्र भूमि पर थूंकना, कचरा फेंकना ऐसा गैर-जिम्मेवारी भरा बर्ताव शोभा नहीं देता, ऐसे खड़े बोल उन्होंने सुनाए थे, इस बात को भी ध्यान में रखना होगा।

व्यापक जनसमर्थन पाकर प्रधानमंत्री मोदी एक बार फिर से सत्ता विराजमान हुए है। सदन नेता की औपचारिकता संपन्न होने पश्चात अहमदाबाद में कार्यकर्ताओं के समीप किए गए भाषण में प्रधानमंत्रीजी ने देश को गरिमामय इतिहास लौटाने का संकल्प किया है। यह गरिमामय इतिहास संपन्नता, समाधान और विराट भारत का पुनर्स्मरण है। सोने की चिड़ियां, दूध-दही की नदियां, सुजलाम-सुफलाम भारत का उद्घोष भारत वर्ष को प्राचीन गरिमामय संपन्न इतिहास याद दिलाता है। यह प्राचीन वैभव केवल भौतिकता में सीमित न था। 'ओल्ड इज गोल्ड' या 'इतिहास पन्ने में ही रहे' इन दो विभिन्न भूमिकाओं को त्यागकर हम संतुलित मध्य का चिंतन स्वीकार सकते है। नित्य नूतन, चिरपुरातन, भारतीय संस्कृति की मूलाधार चिंतन से समय विपरीत समय विसंगत विषयों को त्यागने का विचार ही हमे उन्नयन की ओर ले जाता है। नरेन्द्र मोदी अपनी नीति और कार्यक्रम से हमेशा शाश्वत दर्शन का अनुभव कराने मे सफल रहे हैं।

"महिलाओं को पीड़ा देने वाला व्यक्ति किसी न किसी महिला का बेटा, भाई या पति होता है। परिवार के वरिष्ठ सदस्यों ने युवा सदस्यों को देर रात तक बाहर क्या कर रहे हो? इस प्रकार के सवाल पूछने का साहस दिखाना होगा। लड़कियों की गतिविधियों पर पाबंदी लानेवाले दक्ष अभिभावकों ने बेटों को भी सवाल पूछने चाहिए।" यह किसी भाषण में चिंतित हुए मोदीजी के विचार परंपराधिष्ठीत परिवार व्यवस्था अंतर्गत की महिला-पुरुष समानता का सूत्र अधोरेखित करता है।

"नौकरी मांगनेवाले न बनकर, नौकरी देनेवाले बनो" यह डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का सुत्र विगत अनेक दशकों से क्रियान्वयन की प्रतिक्षा में था। इस सूत्र अनुरूप 'मुद्रा योजना' जैसा उपक्रम मोदीजी के कार्यकाल मे ही अनुभव किया गया पिछड़े वर्गों की उन्नति का मार्ग आर्थिक स्वावलंबन तथा प्रगति से ही होता है। यह समझकर-जानकर मोदी सरकार के कार्य सामाजिक न्याय की संकल्पना को व्यवहार में लाने के लिए परिणामकारक साबित हुए है।

शीर्षस्थ स्थान की शासन प्रणाली और राजनीति में कुंठित हुई उद्देश्यहीनता को समाप्त करके सत्ता को जनकेंद्री और उद्देश्य पूर्ण करने का महत्वपूर्ण कार्य विगत पांच वर्षों में मोदी सरकार ने किया है। आनेवाले पांच सालों में और तेजी एवं असर दिखाना होगा। राजनीति के मायने बदले हुए दिखाई दे रहे हैं। सत्ता का व्याकरण भी बदलता हुआ नजर आ रहा है। ■

शीर्षस्थ स्थान की शासन प्रणाली और राजनीति में कुंठित हुई उद्देश्यहीनता को समाप्त करके सत्ता को जनकेंद्री और उद्देश्य पूर्ण करने का महत्वपूर्ण कार्य विगत पांच वर्षों में मोदी सरकार ने किया है। आनेवाले पांच सालों में और तेजी एवं असर दिखाना होगा। राजनीति के मायने बदले हुए दिखाई दे रहे हैं। सत्ता का व्याकरण भी बदलता हुआ नजर आ रहा है।

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं सांसद हैं)

जन आकांक्षाओं का प्रकटीकरण

भूपेन्द्र यादव

सतरहवीं लोकसभा के चुनाव परिणामों से यह स्पष्ट हो गया कि एकबार फिर मतदाताओं ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और भाजपा सरकार की नीतियों में विश्वास व्यक्त करते हुए स्थायित्व, निरंतरता और विकास के लिए नयी सरकार को चुना है। प्रधानमंत्री मोदी के पिछले कार्यकाल में सरकार द्वारा देश में गरीब-कल्याण हेतु जनधन योजना, उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, मुद्रा योजना आदि अनेक योजनाएं लाई गईं, जिन्होंने जमीनी स्तर पर गरीबों के जीवन में गुणात्मक सुधार लाने का काम किया। साथ ही आर्थिक समावेशन, किसानों की आय में वृद्धि, रोजगार के अवसरों में वृद्धि, अर्थव्यवस्था को मजबूती जैसे विकासपरक कार्य भी बीते पांच सालों में हुए हैं। सरकार के इन कार्यों का प्रतिफल ही अबकी 2014 से भी अधिक सीटों के रूप में जनता ने दिया है।

इस चुनाव पर यदि एक समग्र दृष्टि डाली जाए तो स्पष्ट होता है कि ये पूरी तरह से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विकास पथ पर अग्रसर भारत की यात्रा को सतत जारी रखने का चुनाव था। अपने पिछले कार्यकाल में मोदी सरकार के कामकाज से देश के समक्ष यह स्पष्ट हो गया था कि इस सरकार के पास देश को आगे ले जाने की सोच और दृष्टि है। यही कारण है कि विपक्ष द्वारा रची गयी भ्रम की राजनीति के कुचक्र में मतदाता नहीं फंसे और नरेन्द्र मोदी की विकास की राजनीति को विशाल बहुमत प्रदान किया।

चुनाव से पूर्व राजनीतिक विश्लेषक महागठबंधन को लेकर बड़े-बड़े कयास लगा रहे थे। कहा जा रहा था कि ये भाजपा को बड़ी चुनौती देगा। यूपी में सपा-बसपा का एका था, तो वहीं बिहार में राजद, रालोसपा, कांग्रेस आदि दलों ने गठजोड़ बनाया था। लेकिन परिणामों ने कथित महागठबंधन को अस्वीकार कर दिया और अब चुनाव बीतते ही यूपी से बिहार तक के महागठबंधनों में जिस तरह बिखराव आया है, उससे भी यही साबित होता है कि ये सिद्धांतों का नहीं, केवल सत्ता के लिए हुए स्वार्थ आधारित गठजोड़ थे जो सत्ता की संभावना समाप्त होते ही टूटने लगे।

चुनाव से पूर्व मीडिया विश्लेषणों में जिस तरह से अमुक-अमुक वोट बैंक की बातें देखने को मिलती थीं, उससे ऐसा लगता था जैसे ये किसी लोकतांत्रिक व्यवस्था के विवेकशील नागरिकों के वोट न होकर किसी कबीले के वोट हैं। जाति, धर्म, क्षेत्र आदि के आधार पर इन विश्लेषणों में वोटों का विभाजन बताया जाता था। लेकिन परिणामों ने उन सब विश्लेषणों को निराधार साबित कर दिया है।

इस चुनाव की एक उल्लेखनीय बात यह भी रही कि इसमें मतदाताओं ने 'टुकड़े-टुकड़े गैंग' को पूरी तरह से नकार दिया है। बिहार की बेगूसराय सीट का जनादेश इसका बड़ा उदाहरण है। साथ ही, बंगाल से लेकर त्रिपुरा तक कम्युनिस्ट दलों की हुई करारी हार भी इसी तथ्य को रेखांकित करता है कि देश के मतदाता किसी भी प्रकार के भारत-विरोधी विचार एवं विचारधारा के सख्त खिलाफ हैं।

वाम विचारों से ही पोषित तथाकथित उदारवादियों को भी इस चुनाव ने आईना दिखाने का काम किया है। ये उदारवादी ऐसे हैं जो सिखों का कत्लेआम कराने वाली कांग्रेस के 'हुआ तो हुआ' कहने पर कुछ नहीं बोलते; तीन तलाक जैसे महिलाओं के मुद्दे पर भी खामोश हो जाते हैं; राम मंदिर पर भी कोई स्पष्ट रुख नहीं रखते। ये लोग केवल अपनी सुविधा के मुद्दों पर समर्थन या विरोध में उतरते हैं। लेकिन जनता अब इन तथाकथित उदारवादियों के दोहरे चरित्र को भलीभांति समझ गई है, जिसका प्रकटीकरण इस चुनाव में हुआ है।

चुनाव से पूर्व मीडिया विश्लेषणों में जिस तरह से अमुक-अमुक वोट बैंक की बातें देखने को मिलती थीं, उससे ऐसा लगता था जैसे ये किसी लोकतांत्रिक व्यवस्था के विवेकशील नागरिकों के वोट न होकर किसी कबीले के वोट हैं। जाति, धर्म, क्षेत्र आदि के आधार पर इन विश्लेषणों में वोटों का विभाजन बताया जाता था। लेकिन परिणामों ने उन सब विश्लेषणों को निराधार साबित कर दिया है। दूसरे शब्दों में कहें तो मतों का मैथमेटिक्स के आधार पर आकलन करने की कसौटी गलत सिद्ध है।

इस चुनाव में भाजपा पर यह आरोप खूब उछाला गया कि वो राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीति जैसे मुद्दों को उठा रही है। ये किसी राज्य का चुनाव नहीं था, देश का चुनाव था। अब देश के चुनाव में यदि राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीति जैसे मुद्दे नहीं उठेंगे तो कहां

उठेंगे? ये मुद्दे उठाने आवश्यक थे, जिससे कि सरकार ने इन पर क्या कुछ किया है, उसका रिपोर्ट कार्ड जनता के सामने आए। इसके उलट इन मुद्दों को लेकर विपक्ष की तरफ से जो सवाल खड़े किए गए, वे सर्वथा निर्मूल थे। यह बात चुनाव परिणामों से भी साबित हुई है।

नोटबंदी और जीएसटी के विषय में भ्रामक बातें कहकर विपक्ष ने सरकार के खिलाफ माहौल बनाने की कोशिश की। यह भ्रम फैलाने की भी कोशिश की गयी कि मोदी सरकार में अर्थव्यवस्था अच्छी स्थिति में नहीं है, परन्तु विपक्ष के इन भ्रामक प्रचारों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। नोटबंदी और जीएसटी के लाभ भी लोगों ने समझे और विश्व की तमाम आर्थिक एजेंसियों की रेटिंग्स में भारत की सुधरती साख के जरिये देश के अर्थतंत्र की मजबूती को भी समझा।

सत्रहवीं लोकसभा का ये चुनाव राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को लेकर भी विशेष रहा। इस बार सर्वाधिक महिला जनप्रतिनिधि संसद में पहुंची हैं। 2014 के चुनाव में विजयी महिलाओं की संख्या 61 थी, जो कि इसबार बढ़कर रिकॉर्ड स्तर पर 78 हो गयी है। विशेष बात यह है कि इनमें से सर्वाधिक 40 महिला सांसद भाजपा की हैं। राजनीति में भाजपा हमेशा से महिलाओं की भागीदारी के पक्ष में रही है और इस दिशा में हर संभव प्रयास करती रही है। अबकी भाजपा से सर्वाधिक महिला सांसदों का लोकसभा में पहुंचना हमारी सफलता है।

भाजपा के लिए यह चुनाव इसलिए तो विशेष रहा ही कि उसने अपना अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है, लेकिन इसके साथ ही पार्टी की यह उपलब्धि भी रही कि जम्मू-कश्मीर सहित उत्तर-दक्षिण आदि देश के लगभग सभी क्षेत्रों में वो अपनी उपस्थिति दर्ज कराने व विचारधारा को पहुंचाने में कामयाब रही। अधिकांश जगहों पर पार्टी को जीत मिली, तो कुछेक जगहों पर अपेक्षित सफलता नहीं भी मिली, लेकिन बावजूद इसके पार्टी की नीति और विचारधारा के पूरे देश में प्रसार की दिशा में यह चुनाव महत्वपूर्ण रहा।

बेशक मतदाताओं ने भाजपा को अकेले 303 सीटों के रूप में विशाल बहुमत प्रदान किया है, लेकिन तब भी पार्टी ने एनडीए के दलों का साथ बनाए रखा और सरकार में भी उनकी यथोचित भागीदारी सुनिश्चित कर गठबंधन धर्म के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का परिचय दिया। ये दिखाता है कि भाजपा के लिए गठबंधन के मूल में सिद्धांत होते हैं, सत्ता और स्वार्थ नहीं।

परिणामों के पश्चात् संसद के सेन्ट्रल हॉल में दिए अपने वक्तव्य में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'राष्ट्रीय महत्वाकांक्षा और क्षेत्रीय आकांक्षा' (National Ambition Regional Aspiration) का एक संकल्प नयी सरकार में व्यक्त किया है। यह संकल्प जहां एक तरफ भारत को विश्व-पटल पर महाशक्ति बनाकर सुप्रतिष्ठित करने की महत्वाकांक्षा का है, वहीं दूसरी तरफ क्षेत्रीय आकांक्षाओं को प्रोत्साहन देकर आगे बढ़ाने का उद्देश्य भी इसमें है। इस सूत्र के जरिये प्रधानमंत्री मोदी ने एक प्रकार से अपनी नयी सरकार की भावी रीति-नीति की एक रूपरेखा को ही रेखांकित करने का प्रयास किया है।

कुल मिलाकर यह चुनाव भारतीय लोकतंत्र को और मजबूती देने वाला चुनाव रहा है। वंशवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद जैसी चीजों को इस चुनाव में मतदाताओं ने नकारते हुए यह संदेश देने की कोशिश की है कि वे नए भारत के मतदाता हैं, जिनके लिए देश के विकास और सुरक्षा जैसे मुद्दे सर्वोपरि हैं। कह सकते हैं कि इस चुनाव के साथ ही जनतंत्र की एक नयी शुरुआत हुई है, जो भावी भारत के उत्कर्ष में महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। ■

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री एवं सांसद हैं)

पृष्ठ 37 का शेष

कमलनाथजी की पोल खुल गयी है। जब हम सभी उनके बारे में यह कहते हैं कि वे व्यवसायी हैं, तो कांग्रेसियों को बुरा लगता होगा। पर क्या यह सच्चाई नहीं है कि उनके घर परिवार और निकटतम व्यक्तियों के इंदौर, भोपाल और दिल्ली स्थित ठिकानों से 281 करोड़ तक नकद पाए गए और करोड़ों की संपत्ति भी बरामद हुई। क्या कमलनाथजी ने इसका खंडन किया?

मध्य प्रदेश में कमलनाथजी की यह पहली सरकार है, जिसका मंत्रालय ठेके पर चल रहा है। अधिकारियों के तबादले उद्योग का रूप ले चुका है। 500 से अधिक आईएएस और आईपीएस अधिकारियों के तबादले होना महज मजाक नहीं है। तबादला अब उद्योग बन चुका है। पैसा फेंको और तबादला कराओ। जो जितना पैसा देगा, वह उतनी ही कमाई की पोस्ट पायेगा। यह नारा कमलनाथजी की लंगड़ी सरकार को पूरी तौर पर सार्थक कर रही है।

मध्य प्रदेश की राजनीति में अपने को 'महाराज' और दूसरे अपने को 'राजा' मानने वाले ज्योतिरादित्य सिंधिया और दिग्विजय सिंह की जो दुर्गति हुई है, वह पूरे प्रदेश में चर्चा का विषय है। जनता को नौकर समझकर बरसों से पिता-पुत्र गुना, शिवपुरी संसदीय क्षेत्र में अपनी राजनीतिक दुकान चला रहे थे।

इस बार भाजपा ने चार वर्ष पूर्व इसे अपने एजेंडे में शामिल किया था। खासकर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष 'अमित भाई शाह' ने भी कहा था 'लोकतंत्र में कोई महाराजा और राजा नहीं होता है।' उसी दिन से भाजपा यहां पूरी तरह से भिड़ गयी थी। स्थिति इतनी खराब हो गयी की अरुण यादव, अजय सिंह, सिद्धार्थ तिवारी, कांतिलाल भूरिया पूरी तरह से अपनी-अपनी लोकसभा में धराशाही हो गए।

मध्य प्रदेश भाजपा का गढ़ है। दुर्घटनावश कमलनाथ जी की लंगड़ी सरकार बन गयी, लेकिन समय बदलते देर नहीं लगती। अब देखिये की आने वाले पल में मध्य प्रदेश में क्या होता है। जब तेलंगाना में 12 कांग्रेसी विधायक टीआरएस में जा सकते हैं, तो कहीं भी कुछ भी हो सकता है। ■

भाजपा ने कैसे ओडिशा में पैठ बनाई

अरुण सिंह

2014 के आम चुनावों में भाजपा को 21.5% मत प्रतिशत के साथ ओडिशा में केवल एक लोकसभा सीट से ही संतोष करना पड़ा। यहां तक कि राज्य में साथ ही हुए विधानसभा चुनावों में भी पार्टी का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा था। इसलिए पार्टी ने तत्काल प्रभाव से ओडिशा में संगठन के पुनर्गठन की आवश्यकता को महसूस किया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने भी इस मिशन में रुचि ली और राज्य में भविष्य की रणनीति का खाका तैयार किया। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने स्वयं ओडिशा से पार्टी की सक्रिय सदस्यता लेकर इस प्रक्रिया को प्रारंभ किया।

संगठनात्मक बदलाव

पार्टी ने अपने रोडमैप का खुलासा करते हुए मंडल समितियों की संख्या 450 से बढ़ाकर 1001 करने का निर्णय लिया और हर मंडल में चुनाव करवाए। इसी तरह हमने जिला समितियों और बूथ समितियों का गठन किया। राज्य नेतृत्व का सर्वसम्मति से एक बात पर पूर्ण विश्वास था कि राज्य में बेहतर परिणामों के लिए सभी संसाधनों के साथ एक मजबूत संगठन बेहद आवश्यक है। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अक्सर राज्य का दौरा किया और मिशन की शुरुआत से लेकर हर घटनाक्रम की बार-बार समीक्षा की।

इन प्रयासों को जारी रखते हुए हमनें बूथ समिति की सूची, मतदाता सूची, मोटरसाइकिल रखने वाले पूर्णकालीन कार्यकर्ताओं की सूची, पन्ना प्रमुख की सूची और विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों की सूची तैयार करने में सफलता हासिल की। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए पार्टी के पूर्णकालीन कार्यकर्ताओं ने पिछले तीन वर्षों में जमीनी स्तर पर दिन-रात काम किया है।

इस अवधि के दौरान पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने लगातार हमारा मार्गदर्शन किया, हमारे लिए एक लक्ष्य निर्धारित किया और समय-समय पर संगठन की हर गतिविधि की समीक्षा करते रहे। व्यक्तिगत रूप से उन्होंने राज्य के विभिन्न जिलों में पार्टी नेताओं, कार्यकर्ताओं, शक्ति केंद्र के कार्यकर्ताओं और बूथ समिति के कार्यकर्ताओं के साथ बातचीत की। उन्होंने

ओडिशा के लगभग एक करोड़ लोगों ने इस बार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी पर अपना विश्वास प्रकट किया है, और इसलिए, भाजपा के आठ सांसदों को लोकसभा में भेजा है। यह विश्वास ही हमारी ताकत है। हम 120 प्लस मिशन तक पहुंचने और ओडिशा में सरकार बनाने के लिए आने वाले दिनों में कड़ी मेहनत करेंगे।

ओडिशा में "मेरा बूथ सबसे मजबूत" अभियान की शुरुआत की। इस दौरान श्री शाह ने विभिन्न घरों का दौरा किया और स्वयं दीवार पर पोस्टर भी लगाए। उन्होंने विभिन्न जिलों में दलित और गरीब परिवारों के घर जाकर उनके साथ बातचीत की और उनकी समस्याओं को समझने का प्रयास किया।

इन सभी प्रयासों में सफलता पाने के बाद पार्टी ने जनता से जुड़े मुद्दों और राज्य के समग्र विकास के लिए अपनी आवाज बुलंद करते हुए राज्य के हर जिले में आंदोलन किए, जिसमें बूथ स्तर से लेकर राज्य स्तर तक के सभी कार्यकर्ताओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इसके साथ ही कार्यकर्ताओं को अपनी ताकत का ऐहसास हुआ और संगठनात्मक ताकत को बढ़ाने का मिशन पूरा हुआ।

मोदी सरकार का विकास मंत्र

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भी कई बार ओडिशा का दौरा किया और भारी बजटीय आवंटन के साथ उचित कार्यान्वयन द्वारा लोगों की दीर्घकालिक चिंताओं का समाधान तलाशने का प्रयास किया। प्रधानमंत्री ने राज्य के बरगढ़ से फसल बीमा योजना का शुभारंभ किया। जब मोदी सरकार ने केंद्र में तीन साल पूरे किए, तो प्रधानमंत्री ने बालासोर में लोगों के साथ इस अवसर को मनाया और राज्य के पिछड़े जनजातीय क्षेत्रों का दौरा किया ताकि आदिवासी भाइयों और बहनों को विश्वास हो सके कि सरकार उनके साथ है और उनके विकास के लिए प्रतिबंध हैं।

मोदी सरकार में गरीबों को केंद्र में रखकर विभिन्न योजनाओं का सफल कार्यान्वयन किया गया जैसे उज्ज्वला योजना के तहत बीपीएल परिवारों को एलपीजी कनेक्शन प्रदान करना, स्वच्छता मिशन के तहत स्वच्छता पर ध्यान केन्द्रित करना, आयुष्मान भारत के तहत गरीबों को सर्वोत्तम स्वास्थ्य सुविधा प्रदान करना, 2022 तक सभी को आवास प्रदान करना, देश के अंतिम गांव तक बिजली प्रदान करना, ग्रामीण सड़कों के नेटवर्क को तैयार करना, जन धन योजना के तहत बैंक खाते खुलवाना शामिल है, इन योजनाओं ने ओडिशा के लोगों को आश्वस्त

शेष पृष्ठ 44 पर

अच्छा आर्थिक विकास ही अच्छी राजनीति है

गोपाल कृष्ण अग्रवाल

मोदी सरकार को अभूतपूर्व बहुमत के साथ सत्ता में वापस का मौका मिला है। मोदीजी न केवल भाजपा या राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) के निर्विवाद नेता हैं, बल्कि पूरे देश के एक लोकप्रिय नेता हैं। यह भी उम्मीद है कि 2020 तक एनडीए के पास राज्यसभा में भी बहुमत होगा और परिस्थितियां पिछली सरकार की तुलना में और अनुकूल होगी। जिसके कारण आने वाले समय में श्री नरेन्द्र मोदी के निर्णायक नेतृत्व में कई सुधारों को लागू करने के लिए एक माकूल वातावरण का निर्माण होगा।

आर्थिक प्रबंधन के मामले में मोदी सरकार का पहला कार्यकाल बेहद सफल रहा। जीडीपी में वृद्धि, मुद्रास्फीति पर नियंत्रण, राजकोषीय घाटे पर नियंत्रण और भुगतान संकट को लेकर जरूरी पहल ऐसे ही कुछ सफल प्रयास हैं। मोदी सरकार का पहला कार्यकाल सिस्टम को साफ करने और अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने में काम किया गया। व्यापक आर्थिक मापदंडों को अगर देखें तो वे सभी बहुत अच्छी स्थिति में हैं। मुद्रास्फीति लगभग 4.5% है। जीडीपी विकास दर उच्च पथ पर, लगभग 7.5% है। राजकोषीय घाटा 3.5% है। चालू वित्तीय खाता घाटा भी स्वस्थ है। जीडीपी के अनुपात में टैक्स संग्रह में भी सुधार हुआ है, जो अब 12% है।

मोदीजी ने 'सबका साथ, सबका विकास' मंत्र के साथ प्रधानमंत्री के रूप में पांच साल तक कड़ी मेहनत से अपने दायित्व को निभाया है। यदि हम पीछे मुड़कर देखते हैं, तो हमारी सरकार ने प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT), ऊर्जा, स्वास्थ्य सेवा, किफायती घर, शौचालय और अन्य बुनियादी सुविधाओं को सफलतापूर्वक लागू किया है। ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक खर्च में वृद्धि हुई है। सरकार ने 115 जिलों को आकांक्षात्मक जिला घोषित किया है और 65000 गांवों को पिछड़े क्षेत्र के रूप में चिन्हित किया है और पुश मॉडल पर काम कर रही है। इन जगहों पर जिला कलेक्टरों को उज्ज्वला, उजाला, मुद्रा, आयुष्मान भारत, प्रधानमंत्री आवास योजना आदि सात प्रमुख सरकारी योजनाओं के हर लाभार्थी तक वितरण के लिए जिम्मेदार बनाया गया है ताकि संबंधित क्षेत्रों में प्रत्येक लाभार्थियों पात्र को इन योजनाओं का लाभ पहुंचाया जा सके।

जनसंघ के शुरुआती दिनों से 'अंत्योदय' हमारी विचारधारा रही है, जिसके तहत समाज के अंतिम व्यक्ति को लाभ देना हमारा लक्ष्य है। हमारे वित्तीय समावेशन कार्यक्रम को विश्व बैंक ने भी बहुत सराहा है। पहले कार्यकाल के अंत में मोदी सरकार 22 करोड़ लोगों तक अपनी योजनाओं के साथ पहुंची है, जिसमें समाज के सभी वर्ग शामिल हैं। इस कार्यक्रमों के माध्यम से पार्टी ने जाति और धर्म से ऊपर एक नया समर्थक वर्ग तैयार किया है। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह के इन करोड़ों लाभार्थियों से सीधे जुड़ने के आह्वान के वांछित परिणाम चुनावों में मिले हैं।

मोदीजी ने 'सबका साथ, सबका विकास' मंत्र के साथ प्रधानमंत्री के रूप में पांच साल तक कड़ी मेहनत से अपने दायित्व को निभाया है। यदि हम पीछे मुड़कर देखते हैं, तो हमारी सरकार ने प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT), ऊर्जा, स्वास्थ्य सेवा, किफायती घर, शौचालय और अन्य बुनियादी सुविधाओं को सफलतापूर्वक लागू किया है। ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक खर्च में वृद्धि हुई है। सरकार ने 115 जिलों को आकांक्षात्मक जिला घोषित किया है और 65000 गांवों को पिछड़े क्षेत्र के रूप में चिन्हित किया है।

भारत का महत्वाकांक्षी मध्यम वर्ग आगे बढ़ रहा है, यह नयी अवसरों की तलाश और अच्छे जीवनयापन के रास्ते तलाश रहा है। यह मध्यम-आय वर्ग मांग बढ़ाने वाला और व्यवसाय स्थापित करने में सक्षम है। हम गर्व से याद करते हैं कि पिछले 2000 वर्षों के इतिहास में भारत और चीन ने लगभग 60% वैश्विक व्यापार पर प्रभाव किया था।

ईज ऑफ डूइंग बिजनेस (ईओडीबी) तालिका में 77वें पायदान पर होना हमारे उन प्रयासों को रेखांकित करता है जिसके तहत विनिर्माण क्षेत्र और एमएसएमई क्षेत्र की परेशानियों को चयनित और हल करने का काम हमने किया है। ऐसे ही ई-आकलन व्यवस्था, प्रत्यक्ष कर ढांचे में व्यापक भ्रष्टाचार को दूर करने में प्रभावी साबित हो रहा है। यह प्रक्रिया को सुचारू करेगा और व्यक्तिपरकता को हटा देगा। इन सभी प्रयासों के माध्यम से करदाताओं के लिए प्रभावी कर को कम करने का प्रयास किया जा रहा है।

जीएसटी का कार्यान्वयन एक बड़ा सुधार है। यह कर संरचनाओं जैसे केंद्रीय, राज्य और स्थानीय करों को समावेश करता है, जिसके परिणामस्वरूप उपभोक्ता के लिए अप्रत्यक्ष करों के दरों में कमी होती है, यह पंजीकरण, रिटर्न भरने, रिफंड आदि में ऑनलाइन उपायों के माध्यम से व्यापार करने में आसानी लाता है। यह प्रणाली उपभोक्ता के लिए विनिर्मित वस्तुओं की कीमतों को कम करेगा, सरकार को अधिक कर संग्रह करने में सुविधा होगी, राजकोषीय व्यवस्था जीएसटीएन नेटवर्क के माध्यम से अधिक सुचारू रूप से प्रशासित होगा।

40 लाख रुपये तक के कुल वार्षिक आय वाले छोटे व्यवसायों को जीएसटी से छूट प्राप्त है। ऐसे ही 1.5 करोड़ रुपये तक सालाना टर्नओवर वाले लोग कंपोजिट स्कीम का लाभ उठाकर मात्र 1 प्रतिशत टैक्स देकर जीएसटी की औपचारिकताओं से छुटकारा पा सकते हैं।

पिछले 5 वर्षों में हमारी सरकार ने समस्याओं को हल करने के लिए संस्थागत तंत्र पर ध्यान केंद्रित किया है। आईबीसी, एनसीएलटी और अन्य कानूनी सुधार लागू किए गए। दिवालियापन और एनपीए का सामना करने वाली कई बड़ी कंपनियों में फंसे बैंकों के पैसों की समस्या को अब हल किया जा रहा है। मोदीजी 'प्रगति' कार्यक्रम के तहत अटकी हुई नई परियोजनाओं के पुनरुद्धार पर भी काम कर रहे हैं।

भूमि और श्रम देश के औद्योगिकीकरण के लिए महत्वपूर्ण है। इसलिए केंद्र सरकार भूमि मालिकाना रिकॉर्ड के डिजिटलीकरण पर और भूमि पट्टे समझौते के लागू करने पर भी जोर दे रही है। यह भूमि के स्वामित्व को स्थापित करने में मदद कर रहा है। श्रमिकों के मोर्चे पर हम इस क्षेत्र के श्रमिकों को औपचारिक परिधि में लाने का प्रयास कर रहे हैं। हमारी श्रम शक्ति का 93% अनौपचारिक क्षेत्र में है। इस क्षेत्र में काम करने वालों की स्थिति बहुत खराब है। यूनिवर्सल अकाउंट नंबर (यूएएन) और औद्योगिक अधिनियमों में सरलीकरण के माध्यम से सरकार ने भविष्य निधि (पीएफ), ईएसआई, नौकरी की सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा आदि को लागू करने का काम किया है।

किसान की आय को दोगुना करने के उद्देश्य से हमारी कृषि नीतियां तैयार की जा रही हैं। एमएसपी को उत्पादन की लागत से 150 प्रतिशत तक बढ़ाया गया है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के माध्यम से किसानों को बीमा कवर मिल रहा है। हमारी आयात—निर्यात नीति यह सुनिश्चित करती है कि किसानों को उसकी उपज का बेहतर मूल्य मिले। सरकार ने कई अन्य पहल भी की हैं।

हमारे पास वर्ष 2024 तक 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था के लिए स्पष्ट नजरिया है। हम भारत को एक आर्थिक महाशक्ति बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। श्री नरेन्द्र मोदी के निर्णायक नेतृत्व ने यह सुनिश्चित किया है कि सभी आवश्यक कदम शीघ्रता से लिए जाए।

सरकार करदाता के पैसे के महत्व को समझती है, इसलिए चुनावों में कोई लोकलुभावन घोषणा नहीं की गई। ऐसे ऐलान केवल मुद्रास्फीत को खराब करते है। हमारा ध्यान हमेशा सरकारी खर्च की उपयागिता एवं दक्षता बढ़ाने पर रहा है। हमने अपने घोषणा पत्र में कृषि ऋण माफी की घोषणा नहीं की और फिर भी इतने बड़े बहुमत से जीत गए। यह हमारी सामाजिक कल्याण योजनाओं पर बेहतर लक्ष्यीकरण का ही परिणाम है।

आर्थिक संदर्भ में हम उच्च विकास दर के साथ कम मुद्रास्फीति वाली एक आदर्श स्थिति में हैं। हम मानते हैं कि अच्छा आर्थिक विकास ही अच्छी राजनीति है। ■

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता हैं)

पृष्ठ 42 का शेष

किया कि भाजपा राज्य के विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

केंद्र सरकार की कल्याणकारी योजनाओं जैसे टीकाकरण योजना, मुद्रा योजना, बैंक खातें, उज्ज्वला योजना, फासल बीमा, नीम कोटेड यूरिया और विशेष रूप से गरीबों, किसानों एवं महिलाओं को ध्यान में रखकर जो कार्य किए गए उससे बहुत से लोगों को लाभ मिला और ये लोग भाजपा के समर्थन में एक जुट हुए और पार्टी के लिए एक बड़ा समर्थन आधार तैयार हुआ।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी की लोकप्रियता, प्रदर्शन, करिश्मा और विकास के लिए उनके समर्पित कार्यों ने आखिरकार राज्य के लोगों को आश्वस्त किया और उनके दिलों पर जीत हासिल की। इन सभी संगठनात्मक मजबूती और जमीनी स्तर पर विकास कार्यों ने ओडिशा में पार्टी के सफल प्रदर्शन के लिए जमीन तैयार की।

अंततः, कार्यकर्ताओं की मेहनत रंग लाई और यह लोकसभा चुनावों में परिलक्षित हुआ, जिसमें भाजपा को सफलता मिली। पार्टी का मत प्रतिशत 21.5% से बढ़कर 38.5% जा पहुंचा और पार्टी ने राज्य में आठ लोकसभा सीटों पर विजय प्राप्त की।

भविष्य की रणनीति

पार्टी ने ओडिशा विधानसभा चुनावों के लिए 120^{+} का लक्ष्य निर्धारित किया, लेकिन हम लोकसभा चुनावों के साथ हुए विधानसभा चुनावों में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाए। हालांकि वोट प्रतिशत की बात करें तो हमारा प्रदर्शन ज्यादा बुरा नहीं था, फिर भी हम केवल 23 सीटों पर अपनी जीत सुनिश्चित कर पाए। हालांकि, पार्टी ओडिशा विधानसभा के लिए अपने 120^{+} मिशन को नहीं छोड़ेगी, और एक बार फिर हमने काम शुरू कर दिया है। इसके तहत हमारे सभी विधायक, सांसद और नेता अगली बार इस लक्ष्य को पाने के लिए कड़ी मेहनत करेंगे।

दूसरी बात, बीजेपी का वोट शेयर बीजेडी से सिर्फ 3.5% ही कम रहा। हम पार्टी मशीनरी को मजबूत करने के साथ ही राज्य में अंतिम व्यक्ति तक अपनी कल्याणकारी योजनाओं का लाभ सुनिश्चित कर अगले चुनावों में अपना लक्ष्य हासिल करने का पूरा प्रयास करेंगे।

राज्य में अच्छे प्रदर्शन के लिए हाल ही में श्री धर्मेंद्र प्रधान और श्री प्रताप चंद्र सारंगी जैसे दो सक्षम नेताओं को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने नए मंत्रिमंडल में मंत्री के रूप में शामिल किया है। यह राज्य में पार्टी को और मजबूत करेगा।

ओडिशा के लगभग एक करोड़ लोगों ने इस बार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी पर अपना विश्वास प्रकट किया है और इसलिए भाजपा के आठ सांसदों को लोकसभा में भेजा है। यह विश्वास ही हमारी ताकत है। हम 120 प्लस मिशन तक पहुंचने और ओडिशा में सरकार बनाने के लिए आने वाले दिनों में कड़ी मेहनत करेंगे। ■

(भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अरुण सिंह से कमल संदेश के एसोसिएट एडिटर राम प्रसाद त्रिपाठी की बातचीत पर आधारित)

विजयी हुआ भारत

सुधा मलैया

भारतीय लोकतंत्र का 17वां महासमर 2019। अभूतपूर्व विजय, आशातीत सफलता। नायक से महानायक बने पातंजलि के अवतार नरेन्द्र दामोदरदास मोदी। लगातार दो चुनाव जीतकर, पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के समकक्ष खड़े हुए पहले गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री। भारत के लिखित इतिहास के महानायकों- चंद्रगुप्त मौर्य और समुद्रगुप्त के समान भारत को विश्वगुरु बनने की राह पर ले जाने के लिये। 2014 में नरेन्द्र मोदी जिन्हें विपक्ष ने मौत का सौदागर, राक्षस, नरभक्षी, चोर, घमण्डी, साम्प्रदायिक आदि उपाधियों से विभूषित किया, विजय का अवतार बनकर उभरे थे। 2019 के चुनाव में वे देश के मान और स्वाभिमान, आन-बान-शान के प्रतीक बन गये। देश की ऊंचाई और मान, सरदार वल्लभ भाई पटेल की विश्व की सबसे ऊंची मूर्ति जैसा ऊंचा करने के लिये। विश्व में भारत की साख बढ़ाने के लिये। इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णाक्षरों में भारत का नाम अंकित करने के लिये।

भारतीय लोकतंत्र में बदलाव की सबसे बड़ी क्रांति का सूत्रपात हो गया है। 'मौसम बदलने लगा है, मोदी ने उसे छू भर दिया था, देश उनके साथ चलने लगा है।' बदलाव जाति, धर्म, क्षेत्र से ऊंचे उठकर, देश के बारे में चिंतन करने की सोच का। तमाम गुण-दोषों के साथ हिन्दुत्व भारत की पहचान है, भारत के मान और स्वाभिमान का विषय है, लज्जा का नहीं, के पुनर्जागरण और इस विचार की स्वीकार्यता का। परिवर्तन, देश ही प्रथम है और सर्वोपरि है, यह सिद्ध करने का। मोदी जी ने ठीक कहा 'विजयी भारत' हुआ है। भारत ने स्वतंत्रता के पश्चात् प्रथम बार चुनावों में देशप्रेम का खुल कर इजहार किया और राष्ट्रवाद मुद्दा बना। देश के टुकड़े-टुकड़े करने के ख्वाब देखने वाले, देशद्रोही टुकड़े-टुकड़े गैंग को देश की जनता ने सिरे से नकार दिया। इस चुनाव में सभी दलों के धर्मनिरपेक्षता के नकाब उतर गये और हम हिन्दू हैं, हिन्दुत्व के समर्थक हैं यह बताने के लिये अनेक प्रकार की नौटंकियां देखने को मिलीं।

परिणाम आशानुरूप ही निकले। भाजपा की सरकार और मोदी जी का प्रधानमंत्री बनना सुनिश्चित था। किन्तु भाजपा 300 पार कर लेगी, यह विश्वास केवल भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह और नरेन्द्र मोदी जी को ही था। भाजपा के अच्छे-अच्छे समर्थकों, समर्पित कार्यकर्ताओ और पार्टी के दिग्गज नेताओं, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, शुभचिंतक साधु-संतों, प्रभावी तंत्र-मंत्र अनुष्ठान करने वाले मंत्रसिद्ध स्वामियों को भी, अन्तर्मन से यकीन नहीं था कि भाजपा 300 पार करेगी। कम सीटें मिलने पर सौदेबाजी का ख्वाब देख रहे दलों के अरमानों को ध्वस्त करते हुए भाजपा ने अकेले अपने दम पर 303 सीटें प्राप्त कर के कमाल कर दिया। भाजपा की इस अद्भुत विजय के अनेक कारण हैं।

2014 में मोदी जी की आंधी चली थी। 2019 में मुखर नहीं होते हुए भी जनमानस के अंतर में अंदर ही अंदर देश भक्ति की लहर उमड़ रही थी। ऐसी, जो अपने वेग, गति और शक्ति में किसी भी सुनामी से अधिक शक्तिशाली थी। युद्धकाल के समान सारे भेदभाव भुलाकर देश की जनता ने विविधता में एकता का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। केवल और केवल एक ही विषय सर्वोपरि चर्चा व विचार का रह गया, देश के साथ कौन हैं और विरोध में कौन हैं? बालाकोट सर्जिकल स्ट्राइक तथा पायलट अभिनंदन की दो दिन में वापसी से राष्ट्रवाद व राष्ट्रप्रेम की अद्भुत धारा प्रवाहित हुई और जन्म हुआ उस ऐतिहासिक नारे का 'मोदी है तो मुमकिन है', जो जनमानस के दिलो-दिमाग में घर कर गया। गली, चौबारे, बाजार, हाट, पान की दुकानें, हाथ ठेले, चाट के खोमचे, कारपोरेट हाउसेस, स्टॉक मार्केट, सभी जगह बस एक ही बात...। मोदी ब्राण्ड की भलीभांति पैकेजिंग व मार्केटिंग की गई। मोदी है तो देश सुरक्षित है। मोदी है तो देश का कद ऊंचा होगा। मतदाता ने मौन रहते हुए भी मन बना लिया।

कारण और भी थे। इस मूर्तिपूजक देश में मोदी को छोड़ कोई ऐसी मूर्ति न थी, जिसको मतदाता पूज सकता, और न किसी दल के पास कोई दृष्टि और विचार था, जिसे वे बेच सकते। विपक्ष के असंख्यात दलों में प्रधानमंत्री कौन होगा, यह प्रश्न अनसुलझा ही रहा। भोलीभाली जनता ने उसे गांव के अनुभवी बुजुर्ग की भांति खुद ही सुलझा लिया। विकल्पहीनता से विपक्ष इतना अधिक बौना सिद्ध हो गया कि जनता के पास मोदी के अलावा कुछ सूझा ही नहीं। नरेन्द्र मोदी एकमात्र विकल्प थे। वे मजबूरी नहीं जरूरी सिद्ध हुए। राहुल गांधी ऐसा कुछ भी नहीं कर सके, कुछ भी नहीं कह सके जो जनता को प्रभावित करता। उल्टा उनके बोलने मात्र से ही जनता इतनी गुस्सा हो गयी कि लोग सोशल मीडिया में, टी.वी. में घुस कर उनको थप्पड़ मारने की तकनीक पूछने लगे।

महागठबंधन, मोदी जी के शब्दों में महामिलावटी गठबंधन है, यह उसी दिन सिद्ध हो गया, जिस दिन सारे दलों ने कोलकाता में महागठबंधन रैली की। उस दिन देश समझ गया कि ये सारे तथाकथित देशरक्षक और संविधान संरक्षक दल मुखौटा लगाए हुए सत्ता के भूखे, भारत मां के भक्षक हैं और संविधान की धज्जियां उड़ाने को तैयार बैठे हैं। ये न कभी देश के हितचिंतक थे, न कभी होंगे। प्रधानमंत्री कुर्सी रेस के ये दावेदार, अपनी ढपली अपना राग बजाते रहे। वे चीख-चीख कर कहते रहे कि मोदी सरकार ने नोटबंदी, जी.एस.टी. आदि की भयंकर भूलें कीं, रोजगार के अवसर कम कर दिये, आतंकवाद पर काबू नहीं पाया और साम्प्रदायिक दुर्भाव फैलने दिया, लेकिन जनता ने इसका विश्वास नहीं किया।

राहुल गांधी गब्बर सिंह टैक्स से डराते रहे और जनता मोदी जी के पाले में जा कर निर्भय हो गई। नामदार चिल्लाते रह गए कि नीरव मोदी की जेब में जनता का पैसा डाल दिया, जनता

ने मोदी के लिये दिलों के खजाने खोल दिये। बोफोर्स डील पर सत्ता से बाहर होने वाले राजीव गांधी के पुत्र रफायल सौदे को मुद्दा बनाते रहे, जनता ने सर्जिकल स्ट्राइक करके, देश का गौरव बढ़ाने वाले के पक्ष में रफायल की फाइल बंद कर दी। विपक्ष नोटबंदी से कतार में खड़े होने का दर्द याद दिलाते रहे, जनता ने इसे भुला कर, कतारबद्ध होकर मोदी के पक्ष में भरपूर मतदान किया। वह मुंह फुला-फुला कर नाटकीय अंदाज में प्रधानमंत्री को गाली देते रहे, जनता मोदी पक्ष में लामबद्ध होती गई। मोदी की सकारात्मक छवि के विरुद्ध राहुल गांधी की पप्पू वाली छवि से पूरे चुनाव में हाशिए पर खड़े मतदाता ये सवाल पूछते हुए नजर आए कि मोदी को नहीं चुनें तो क्या राहुल को चुनें? मोदी बनाम कौन, के प्रचार से भाजपा की राह आसान होती गई। निवर्तमान सांसद प्रत्याशी ने क्षेत्र में कुछ किया या नहीं, वह लोकप्रिय रहा या अलोकप्रिय, बिना प्रत्याशी का चेहरा देखे, और बगैर 5 वर्षों का हिसाब मांगे, जनता ने कमल का बटन दबा दिया। भाजपा की सभी सीटों पर केवल एक प्रत्याशी लड़ रहा था, नरेन्द्र दामोदरदास मोदी। भारतीय लोकतंत्र ने पहली बार अध्यक्षात्मक प्रणाली से देश का चुनाव लड़ा।

हर क्षेत्र में, हर वर्ग के लिए, किसानों गरीबों, युवाओं, महिलाओं को लोक कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से मोदी सरकार द्वारा मिली वित्तीय सहायता, जो भारत के इतिहास में पहले कभी नहीं दी गई, ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। कांग्रेस के किसानों की कर्ज माफी के वादे की अपेक्षा मोदी जी द्वारा उनके खातों में प्रतिवर्ष 6000 रु. पहुंचाने वाली बात पर भरोसा किया। देश की महिलाएं मोदी के पक्ष में खड़ी हो गईं, क्योंकि उन्होंने समझा कि कैसे मोदी की उज्ज्वला योजना ने उनके जीवन में उजाला भरा। उन्हें अहसास हुआ कि घर-घर शौचालय बनवा कर, शर्मिंदगी के अहसास से उन्हें मुक्ति दिलाकर उनकी अस्मिता और सम्मान की रक्षा मोदी ने की। बरसात में चूती कच्ची छतें और सर्दी में कड़कड़ाती हुई ठंड से पक्की छत दे कर निजात मोदी जी ने दिलायी जो आज तक किसी प्रधानमंत्री ने नहीं सोची। पूरे देश में महिलाओं ने मुखर होकर, स्वयं तो मोदी जी को वोट दिया ही, परिवारजनों और नाते रिश्तेदारों पर भी उन्हें वोट देने का दबाव बनाया।

विपक्ष बोलता रहा कि मोदी ने बेरोजगारी के मुद्दे को दरकिनार कर दिया, किन्तु मोदी जी की युवाओं के लिये स्टार्टअप, कौशल उन्नयन तथा हस्तकौशल विकास योजना तथा व्यापार या उद्योग करने के लिये 25 लाख तक रुपये के ऋण आदि योजनाओं से युवा मोदी जी के दीवाने हो गये। नवम्बर में सम्पन्न विधानसभा चुनावों में कर्ज माफी के झूठे प्रलोभन में बह गए किसानों को भी अब कोई स्लोगन और प्रलोभन आकर्षित नहीं कर सका। कोई वादा उन्हें भरमा नहीं सका। न्याय के नाम पर दलितों को 72000 रुपए ललचा नहीं सके। न्याय की बात करके राहुल गांधी कठघरे में खड़े हो गये और स्वयं स्वीकार कर लिया कि 60 वर्ष तक कांग्रेस अन्याय करती रही?

विधानसभा चुनावों में कांग्रेस को जिताने वाली जनता ने संसदीय चुनाव में मध्यप्रदेश में 1, राजस्थान में 0, छत्तीगढ़ में 2 सीटें देकर, बुरी तरह से रद्द कर दिया। तीनों राज्यों में अप्रत्याशित रूप से भाजपा को 65 में से 62 सीटें मिलीं। कांग्रेस के अनेक दिग्गज पराजित हुए। 5 माह में जो प्रदेश का बंटाधार कमलनाथ सरकार ने किया, जनता ने ब्याज सहित कांग्रेस से बदला ले लिया। प्रदेश के सारे राजा-महाराजा और दरबारी निपट गये।

उत्तरप्रदेश में जातीय समीकरण को ध्वस्त करते हुए भाजपा 62 सीटें जीतकर अपना गढ़ बचाने में कामयाब रही। अपने दम पर उत्तरप्रदेश जीतने का दम्भ भरने वाले राहुल गांधी अपनी सीट तक गंवा बैठे। स्मृति ईरानी राजनीतिक क्षेत्र में महानायिका बन गईं। किसी तरह सोनिया गांधी की सीट बच पायी। गंगाजल से आचमन करतीं, मंदिरों की दहलीजों पर माथा टेकतीं, महासचिव के रूप में कांग्रेस में शानदार एण्ट्री करने वाली और बड़े-बड़े कटु बोल बोलने वाली प्रियंका खान वाड्रा भयंकर अप्रिय सिद्ध हुईं।

अमित शाह ने अथक श्रम, परिश्रम और बुद्धि कौशल से, भाजपा के संकल्पित प्रतिबद्ध कार्यकर्ताओं की टीम के साथ भाजपा की विजय का पथ प्रशस्त कर दिया। इस नेरेटिव ने कि 'मोदी है तो मुमकिन है' और 'अमित शाह है तो सम्भव है', ने जनमानस पर पर्याप्त प्रभाव डाला। अमित शाह की जो छवि बनाई गई कि वे कुछ भी कर सकते हैं, कहीं की भी राज्य सरकार गिरा सकते हैं, बना सकते हैं। यहां तक कि वे पाकिस्तान में भी भाजपा सरकार बनाने में सक्षम हैं आदि प्रचार से एक ओर भाजपा ने धारणा की लड़ाई जीती तथा दूसरी ओर मनोबल के स्तर पर भाजपा ने विपक्ष को बुरी तरह पराजित कर दिया। रामायण के बालि के समान जो अपने दुश्मन की आधी शक्ति युद्ध से पहले ही हर लेता था, मोदी के आक्रामक प्रचार व लोकप्रियता ने विपक्ष की आधी शक्ति और पूरी बुद्धि हर ली गई। बजाए एकजुट होने के विपक्षी दल बुरी तरह बौखला गये। यूं भी विपक्ष के पास कहने और देने को कुछ नहीं था। ब्राण्ड 'मोदी' ने हर जगह काम किया। उल्लेखनीय है कि महाराष्ट्र में शिव सेना ने और बिहार में नीतिश कुमार ने भी मोदी जी के नाम से वोट मांगे।

पिछला चुनाव मोदी जी ने कांग्रेस के भ्रष्टाचार के विरोध में लड़ा था। किन्तु यह चुनाव उन्होंने अपने दम से, अपनी उपलब्धियों के आधार पर लड़ा और बेहतर जीत दर्ज की। जीत के बाद सेंट्रल हॉल में दिये गये अपने भाषण में उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि वे सबको साथ लेकर विरोधियों को भी अपना मानकर, अल्पसंख्यकों का विश्वास जीत कर, पड़ोसी देशों को सहयोग कर के और दुश्मन का मुकाबला करते हुए भारत को उस मुकाम तक ले जाएंगे, जिसके लिये भारत देश हजार वर्षों से प्रतीक्षा में है। भारत अवश्य विजयी होगा क्योंकि इसी चुनाव ने सिद्ध किया भले ही भाषायें अनेक हों, देशप्रेम का भाव एक सा है। रंग भले ही बहुत सारे हों, तिरंगा सबका है। राहें अलग हो सकती हैं, किन्तु सबकी मंजिल शांति और विकास की है। कितने भी समाज हों, देश तो सबका एक है। और अब जब भारत में एकता का यह भाव पुष्ट होने लगा है तो श्रेष्ठता की ओर स्वयं अग्रसर हो गया है। ये चुनाव भारत के इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ है, जिसमें भारत अपने पुराने वैभव व गौरव के साथ विजयी हुआ है। सबका विश्वास जीतते हुए, सबका साथ लेते व देते हुए, सबका विकास करने के लिये। ■

(लेखिका भाजपा राष्ट्रीय प्रकाशन एवं पत्र-पत्रिकाएं विभाग की सदस्या हैं)

भाजपा निश्चित रूप से बंगाल में अगली सरकार बनाएगीः सुरेश पुजारी

ओडिशा के बरगढ़ से नवनिर्वाचित सांसद श्री सुरेश पुजारी जो स्पष्टता और संवेदनशीलता के लिए जाने जाते हैं, भाजपा के युवा नेतृत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक युवा नेता के रूप में अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत करते हुए उन्होंने 2015 से अब तक भाजपा के राष्ट्रीय सचिव और पश्चिम बंगाल में पार्टी के सहप्रभारी की जिम्मेदारी संभाली है। इससे पहले श्री पुजारी ओडिशा भाजपा में राज्य उपाध्यक्ष (2000), राज्य महासचिव (2004) और ओडिशा पार्टी अध्यक्ष (2006) के रूप में कई महत्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवाएं दी हैं।

जैसाकि पश्चिम बंगाल ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली टीएमसी के कुशासन के बोझ तले दबता जा रहा है, श्री पुजारी ने कमल संदेश के एसोसिएट एडिटर राम प्रसाद त्रिपाठी के साथ एक एक्सक्लूसिव इंटरव्यू में साल 2019 के लोकसभा चुनावों में भाजपा के बेहतरीन प्रदर्शन और राज्य में होने वाले विधानसभा चुनाव के संदर्भ में पार्टी की भविष्य की रणनीति पर अपनी बात रखी।

श्री पुजारी ने यह भी बताया कि कैसे भाजपा पश्चिम बंगाल से टीएमसी को उखाड़ फेंकने की योजना बना रही है और राज्य को हिंसा, अपराध और अराजकता के दुष्चक्र से बाहर लाएगी और बंगाल की उस शानदार अतीत को फिर से स्थापित करेगी, जो पिछले चार दशकों से राज्य में दिखाई नहीं देता है। प्रस्तुत है इस बातचीत के प्रमुख अंशः

ओडिशा के बरगढ़ निर्वाचन क्षेत्र से संसद सदस्य के रूप में चुने जाने पर आपको बधाई। भाजपा ने ओडिशा में भी अच्छा प्रदर्शन किया है और अपनी लोकसभा सीटें एक से बढ़ाकर आठ कर दी हैं। वहीं पड़ोसी राज्य पश्चिम बंगाल में, जहां पार्टी 2014 में सिर्फ दो लोकसभा सीटों पर सीमित थी इस बार 18 लोकसभा सीटें जीतने में कामयाब रही। सत्तारूढ़ टीएमसी को उसके गढ़ में हराना वास्तव में एक बेजोड़ प्रदर्शन था। इस बेहतरीन जीत के मुख्य कारण क्या हैं?

सबसे पहले, आपकी हार्दिक शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद। मैं बरगढ़ के मतदाताओं, अपने राज्य के लोगों, पार्टी के बुजुर्गों और भाजपा के निस्वार्थ कार्यकर्ताओं के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूं, जिनके कारण ओडिशा में मेरी और मेरी पार्टी की प्रभावशाली जीत संभव हुई।

जहां तक पश्चिम बंगाल की बात है, आपने ठीक ही कहा है कि पिछले 2014 के आम चुनावों में सिर्फ दो लोकसभा सीटों पर जीत दर्ज की और इस बार 18 लोकसभा सीटों को भारी अंतर से जीतना और ममता बनर्जी की अगुवाई वाली टीएमसी को उसके गढ़ में मात देना, सच में भाजपा का शानदार प्रदर्शन है।

पार्टी की इस उपलब्धि के पीछे कई कारण हैं। सबसे पहले, पश्चिम बंगाल में भाजपा के जमीनी कार्यकर्ता राज्य की निरंकुश टीएमसी सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए पिछले कई वर्षों से वास्तव में काम कर रहे है। इसलिए, निर्विवाद रूप से इस भारी जीत का मुख्य श्रेय पार्टी के इन निस्वार्थ कार्यकर्ताओं को जाता है।

दूसरी बात यह है कि पिछले पंचायत चुनावों और उसके बाद के टीएमसी प्रायोजित हिंसा और आतंकवाद का विरोध करते हुए हमारे सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं ने अपने प्राणों की आहुति दी और उन्हें गंभीर चोटें आईं। हिंसा का विरोध करते हुए हमारे वरिष्ठ नेता और मंत्री भी घायल हुए। मैं, स्वयं 2015 में टीएमसी के गुंडों के हिंसक हमले का शिकार हुआ, जिसमें मुझे गंभीर चोट आई। लेकिन हमने पूरे साहस के साथ सीएम ममता बनर्जी की दमनकारी नीतियों का विरोध किया और अपना संघर्ष जारी रखा।

तीसरी बात, बंगाल में टीएमसी सरकार ने जमकर अल्पसंख्यकों

का तुष्टिकरण किया, जिससे हिंदुओं की भावनाएं आहत हुई, राज्य भर में सरस्वती पूजा, काली पूजा और रामनवमी समारोह के लिए बाधाएं पैदा करना, हिंदू जुलूसों पर प्रतिबंध और रोहिंग्या शरणार्थियों एवं बांग्लादेशियों की घुसपैठ को प्रोत्साहित देकर, लोगों में ऐसी भावना को जन्म दिया गया, जिससे लगने लगा कि टीएमसी सरकार द्वारा बंगाल का 'कश्मीरीकरण' किया जा रहा है और इसी घटनाक्रम के कारण मतदाताओं ने चुनाव की शुरुआत से ही मोदीजी को वोट देने और केंद्र में एक मजबूत भाजपा सरकार बनाने का मन बना लिया था।

यही नहीं, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कठिन एवं फोकस प्रयास और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह जी का मार्गदर्शन, पार्टी के राष्ट्रीय सह—महासचिव (संगठन) श्री शिव प्रकाश जी का परिश्रम, भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव एवं पश्चिम बंगाल के भाजपा प्रभारी श्री कैलाश विजयवर्गीय जी का इस जीत में अहम योगदान रहा। राज्य भाजपा के सभी पदाधिकारी और केंद्र में मोदी सरकार के पिछले पांच वर्षों के उत्कृष्ट प्रदर्शन ने पार्टी के इस शानदार प्रदर्शन के लिए एक महत्वपूर्ण जमीन तैयार की।

2019 के आम चुनावों के बाद भाजपा पश्चिम बंगाल में 18 लोकसभा सीटों और 40% से अधिक मत-प्रतिशत के साथ एक बड़ी ताकत बनकर उभरी है। हमारी पार्टी के अभूतपूर्व उत्थान को देखकर ममता बनर्जी भयभीत हो रही हैं। यही कारण है कि वह अपने कार्यकर्ताओं को हमारे नेताओं एवं कार्यकर्ताओं पर हमला करने का निर्देश दे रही हैं। हालांकि, हिंसा, अपराध और असामाजिक तत्वों का लोकतांत्रिक व्यवस्था में कोई भविष्य नहीं होता है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने हमेशा रचनात्मक राजनीति एवं 'सबका साथ, सबका विकास' जैसी धारणाओं में अपना विश्वास प्रकट किया है। उनका मानना है कि विकास ही सभी समस्याओं का समाधान है। इसलिए हमारे लिए वर्तमान बंगाल की सभी समस्याओं का एकमात्र समाधान विकास है।

इस बार बंगाल में भाजपा किन प्रमुख मुद्दों के साथ जनता के बीच गई?

मुख्य रूप से 2019 का लोकसभा चुनाव प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के करिश्माई और उनके सुशासन, विकास एवं गरीब के लिए उनकी कल्याण योजनाओं के ईदगिर्द ही घूमता रहा।

श्री नरेन्द्र मोदी का बेदाग ट्रैक रिकॉर्ड, भ्रष्टाचार मुक्त शासन, राष्ट्र के प्रति उनकी प्रतिज्ञा, काम के प्रति समर्पण, 'न्यू इंडिया' के लिए उनका विजन, 'सबका साथ सबका विकास' का नजरिया और राष्ट्र को देशद्रोहियों के चंगुल से सुरक्षित रखने की उनकी प्रतिबद्धता ने हर भारतीय का दिल जीत लिया।

भाजपा सरकार की लोकप्रिय योजनाएं जैसे उज्ज्वला योजना के तहत बीपीएल परिवारों को एलपीजी कनेक्शन प्रदान करना, स्वच्छता मिशन के तहत स्वच्छता मुहैया कराना, जन धन बैंक खाते, आयुष्मान भारत के तहत गरीबों को सर्वोत्तम स्वास्थ्य देखभाल की सुविधा प्रदान करना, 2022 तक सभी को घर मुहैया कराना, देश के आखिरी गांव तक बिजली मुहैया कराना, देश के कोने-कोने में ग्रामीण सड़कों का नेटवर्क, रक्षा क्षेत्र को मज़बूत करना, एक मजबूत अर्थव्यवस्था कुछ ऐसी प्रमुख बातें और मुद्दे हैं, जो लोकसभा चुनावों के दौरान जनता के दिलों पर हावी रहे।

एक समय बंगाल सांस्कृतिक और बौद्धिक क्रांति के लिए जाना जाता था जिसने राष्ट्र को प्रेरित किया। हालांकि, पिछले कुछ दशकों में परिदृश्य पूरी तरह उलट हो गया है। आपको लगता है कि बंगाल के पतन के लिए कौन से कारक जिम्मेदार हैं?

दुःख की बात है कि मुझे इस बात पर सहमत होना पड़ा रहा है। बंगाल की धरती ने कुछ महान हस्तियों जैसे श्री चैतन्य, रामकृष्ण, विवेकानंद, श्री अरबिंदो, रवींद्रनाथ टैगोर, सुभाष बोस, डॉ. मुकर्जी और कई अन्य स्वतंत्रता सेनानियों, समाज सुधारकों, वैज्ञानिकों और नोबेल पुरस्कार विजेताओं को जन्म दिया। स्वतंत्रता पूर्व बंगाल स्वतंत्रता आंदोलन का केंद्र था और उद्योग एवं शिक्षा का भी एक प्रमुख केंद्र था। हालांकि, राज्य की गिरावट की शुरुआत सत्ता में वाम दलों के प्रवेश के साथ हुई। लगभग चार दशकों के वाम शासन में विकास और भ्रष्टाचार के बजाय अपराध ने राज्य पर शासन किया।

विनाशकारी वाम शासन के बाद सत्ता टीएमसी के हाथों में चली गई। सभी आशान्वित थे कि ममता बनर्जी पश्चिम बंगाल के गौरव को पुनः स्थापित करेंगी और एक विकसित राज्य के रूप में प्रदेश का विकास होगा। लेकिन अफसोस कि ममता बनर्जी ने बंगाल के साथ धोखा किया। वामपंथियों ने निश्चित रूप से पश्चिम बंगाल को बर्बाद कर दिया, लेकिन टीएमसी सरकार ने राज्य को ऐसे परिस्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है जहां से वापसी करना बेहद कठिन काम है।

ममता बनर्जी 'परिवर्तन' के नारे के साथ सत्ता में आईं, लेकिन राज्य में 'परिवर्तन' कहीं भी नहीं हुआ। कई सेक्टर बर्बाद हो गए, नौकरी खत्म हो गई और आखिरकार लोग राज्य से पलायन करने को

मजबूर होना पड़ा।

अब, मुख्यमंत्री विपक्ष पर दमन करके लोकतंत्र का गला घोंटने की कोशिश कर रहे हैं। यहां तक कि 'जय श्री राम' कहना भी ममता बनर्जी और उनके नेताओं के लिए असहनीय है। मुख्यमंत्री की भाषा और व्यवहार का स्तर गिर गया है कि इसकी चर्चा इस समय पूरे देश में हो रही है। वर्तमान टीएमसी शासन में बंगाल उथल-पुथल के एक भयानक दौर से गुजर रहा है और राज्य की राजनीतिक संस्कृति में बहुत अधिक गिरावट आयी है। अब आम लोग इस परिस्थिति को पहचान रहे है कि बंगाल तेजी से बर्बाद हो रहा है और यह पतन के कगार पर है।

एक जिम्मेदार राजनीतिक दल और पश्चिम बंगाल में एक बड़ी ताकत के रूप में भाजपा राज्य को हिंसा, अपराध, अराजकता और गिरावट के इस दुष्चक्र से कैसे निकालेगी?

2019 के आम चुनावों के बाद भाजपा पश्चिम बंगाल में 18 लोकसभा सीटों और 40% से अधिक मत-प्रतिशत के साथ एक बड़ी ताकत बनकर उभरी है। हमारी पार्टी के अभूतपूर्व उत्थान को देखकर ममता बनर्जी भयभीत हो रही हैं। यही कारण है कि वह अपने कार्यकर्ताओं को हमारे नेताओं एवं कार्यकर्ताओं पर हमला करने का निर्देश दे रही हैं। हालांकि, हिंसा, अपराध और असामाजिक तत्वों का लोकतांत्रिक व्यवस्था में कोई भविष्य नहीं होता है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने हमेशा रचनात्मक राजनीति एवं 'सबका साथ, सबका विकास' जैसी धारणाओं में अपना विश्वास प्रकट किया है। उनका मानना है कि विकास ही सभी समस्याओं का समाधान है। इसलिए हमारे लिए वर्तमान बंगाल की सभी समस्याओं का एकमात्र समाधान विकास है।

मेरा मानना है लोकतंत्र में जनता का फैसला ही आखिरी होता है। जनता ने इस बार ममता बनर्जी के जंगलराज और लोकतंत्र विरोधी शासन को उचित जवाब दिया है। आगामी विधानसभा चुनावों में बंगाल की जनता टीएमसी और उनके समर्थकों को बंगाल की खाड़ी में स्वाहा कर राज्य में भाजपा सरकार लाएगी।

वह दिन दूर नहीं जब भाजपा राज्य को हिंसा, अपराध और अराजकता के दुष्चक्र से बाहर निकालेगी और बंगाल के गौरवशाली अतीत को फिर से जीवित करेगी, जो पिछले चार दशकों से राज्य से अलग-थलग हो गया है।

पश्चिम बंगाल में विस्तार के लिए भाजपा की क्या रणनीति है?

पार्टी का वर्तमान केवल एक छोटी शुरुआत है। यह बताता है कि पश्चिम बंगाल में भाजपा का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। आम लोग यह अच्छी तरह से जानते हैं कि उनके प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी उनके विकास के लिए चौबीसों घंटे काम कर रहे हैं। जिससे राज्य में भाजपा की लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन अपने आप बढ़ रही है।

इस बार हमने भारी अंतर से राज्य की 18 सीटें जीतीं और कुछ सीटें बहुत कम अंतर से हारे हैं। लोकसभा परिणामों के अनुसार भाजपा राज्य के 149 विधानसभा क्षेत्रों में आगे थी। हालांकि, हमारा ध्यान राज्य की सभी 40 लोकसभा सीटों पर है और अगले आम चुनाव में इन पर विजय प्राप्त करना एवं बंगाल में भाजपा की सरकार बनाना ही हमारा अगला लक्ष्य है। हम इसे हासिल करने की पूरी कोशिश करेंगे।

दूसरी बात, बंगाल में लोग महसूस कर रहे हैं कि भाजपा ही एकमात्र पार्टी है जो बिना किसी भेदभाव के विकास ला सकती है। अगर भाजपा राज्य में सरकार बनाती है तो वह राज्य को नई ऊंचाई पर ले जा सकती है। यही हमारी पूंजी है।

तीसरा, हम अपराधियों के चंगुल से बंगाल को बचाने के लिए लड़ेंगे; हम राज्य के पिछले गौरव को वापस लाने के लिए लड़ेंगे, हम बंगाल के 'कश्मीरीकरण' को रोकने के लिए लड़ेंगे और हम पार्टी संगठन को मजबूत करने के लिए जमीनी स्तर तक काम करेंगे।

अपने शब्दों और कार्य के साथ टीएमसी कीचड़ फैलाने का काम कर रही है, जिससे कमल खिलाने के लिए एक अनुकूल वातावरण तैयार हो रहा है। इसलिए मैं राज्य और अपनी पार्टी के उज्ज्वल भविष्य की उम्मीद कर सकता हूं और मुझे विश्वास है कि भाजपा निश्चित रूप से बंगाल में अगली सरकार बनाएगी। ■

कमल संदेश अब इंटरनेट पर भी उपलब्ध

लॉग इन करें:

www.kamalsandesh.org

राष्ट्रीय विचार की प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका

उत्तराखंड के वित्त मंत्री प्रकाश पंत नहीं रहे

(11 नवंबर, 1960 – 5 जून, 2019)

उत्तराखंड के वित्त मंत्री श्री प्रकाश पंत का 5 जून को अमेरिका में आकस्मिक निधन हो गया। वे 58 वर्ष के थे। कैंसर से पीड़ित होने पर वहां पर उनका इलाज चल रहा था। वरिष्ठ भाजपा नेता श्री पंत के पास संसदीय कार्य समेत कई अहम विभाग थे। पिथौरागढ़ से विधायक श्री प्रकाश पंत को रावत सरकार में बेहद महत्वपूर्ण और ज्ञानवान सदस्य के रूप में जाना जाता था।

11 नवंबर 1960 को जन्मे श्री पंत के पिता का नाम श्री मोहन चन्द्र पन्त और माता का नाम श्रीमती कमला पन्त है। सरकारी सेवा में स्वच्छन्द रूप से समाज सेवा न कर पाने के कारण श्री पंत ने 1984 में पद से त्यागपत्र दे दिया और भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर ली।

वे 1988 में पिथौरागढ़ की नगर पालिका परिषद के सदस्य बने और 1998 में विधानसभा उत्तर प्रदेश के सदस्य निर्वाचित हुए। वे 2001 में उत्तराखंड के प्रथम विधानसभा अध्यक्ष बने। 2002 और 2007 में पिथौरागढ़ विधानसभा से वे दो बार सदस्य निर्वाचित हुए और द्वितीय निर्वाचित सरकार में कैबिनेट मंत्री बने।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ट्वीट कर उनके निधन पर शोक जताया। प्रधानमंत्री ने कहा, 'उत्तराखंड के वित्त मंत्री श्री प्रकाश पंत के निधन से दुःख हुआ है। उनके सांगठनिक कौशल ने भाजपा को मजबूती प्रदान की और प्रशासनिक दक्षता ने उत्तराखंड के विकास में योगदान दिया। उनके परिवार एवं समर्थकों के प्रति मेरी संवेदनाएं।'

वित्त मंत्री श्री प्रकाश पंत के निधन पर मुख्यमंत्री श्री त्रिवेंद्र सिंह रावत ने दुःख जताया। मुख्यमंत्री श्री रावत ने ट्वीट कर लिखा- 'उत्तराखंड में मेरे वरिष्ठ सहयोगी एवं प्रदेश के वित्त मंत्री श्री प्रकाश पंत जी का अमेरिका में इलाज के दौरान स्वर्गवास होने का समाचार पा कर स्तब्ध भी हूं और व्यथित भी। प्रकाश जी का जाना मेरे लिए व्यक्तिगत एवं अपूर्णीय क्षति है; उनके निधन से हमारा तीन दशक पुराना साथ यादों में रह गया।' ■

नहीं रहीं पूर्व भाजपा सांसद शीला गौतम

(15 नवंबर, 1931 – 8 जून, 2019)

अलीगढ़ से चार बार भाजपा सांसद रहीं श्रीमती शीला गौतम का 8 जून को निधन हो गया। वे 88 वर्ष की थीं। वह प्रसिद्ध स्लीपवेल फोम कंपनी की मालिक भी थीं। श्रीमती शीला गौतम का जन्म 15 नवंबर, 1931 को हुआ था। श्रीमती गौतम के पिता श्री मोहनलाल गौतम स्वतंत्रता सेनानी थे। वह कई बार जेल जा चुके थे। श्रीमती शीला गौतम ने भी शुरुआती दौर में काफी संघर्ष किया। 1991 में श्रीमती गौतम अलीगढ़ संसदीय क्षेत्र से पहली बार भाजपा सांसद बनीं। वर्ष 1991, 1996, 98, 99 में लगातार चार बार सांसद रहीं।

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह, भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) श्री रामलाल, केंद्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह आदि वरिष्ठ नेताओं ने भी ट्वीट कर श्रीमती शीला गौतम के निधन पर शोक जताया।

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने श्रीमती गौतम के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया और ट्वीट कर पार्टी के प्रति उनके समर्पण की सराहना की। उन्होंने उनके परिवार और सगे-संबंधियों के प्रति संवेदना व्यक्त की और दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पूर्व सांसद श्रीमती शीला गौतम के निधन पर गहरा शोक प्रकट किया। शोक संदेश में श्री योगी ने कहा कि शीला गौतम अत्यंत लोकप्रिय जनप्रतिनिधि थीं और उन्होंने लोकसभा में अलीगढ़ क्षेत्र का चार बार प्रतिनिधित्व किया। वह हमेशा क्षेत्र के विकास के लिए तत्पर रहती थीं। उनके निधन से जनता ने एक सच्चा हितैषी खो दिया है। उनकी कमी की भरपाई नहीं की जा सकती है। ■

@narendramodi

शीला गौतम जी को भाजपा को मजबूत बनाने हेतु उनकी महान सेवाओं और प्रयासों के लिए याद किया जाएगा। उन्होंने सम्पूर्ण समर्पण के साथ अपने क्षेत्र की सेवा की। उनका निधन दुःखकारी है। उनके परिवार और सगे-संबंधियों के प्रति मेरी संवेदनाएं। ओम शांति।

संसद के केंद्रीय कक्ष में
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

संसद के केंद्रीय कक्ष में राजग का नेता चुने जाने के बाद श्री लालकृष्ण आडवाणी से आशीर्वाद लेते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

संसद के केंद्रीय कक्ष में राजग सांसदों को संबोधित करते भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह

संसद के केंद्रीय कक्ष में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह, भाजपा वरिष्ठ नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी, डॉ. मुरली मनोहर जोशी व अन्य राजग नेतागण

लोकसभा चुनाव 2019 में भारी विजय के बाद संसद के केंद्रीय कक्ष में राजग सांसदों द्वारा नेता चुने जाने के दौरान की छवियां

लोकसभा चुनाव 2019 में भारी विजय के बाद राजग का नेता चुने जाने के बाद पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी से मिलते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

लोकसभा चुनाव 2019 में भारी विजय के बाद राजग का नेता चुने जाने के बाद उपराष्ट्रपति श्री एम. वैंकेया नायडू से मिलते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

प्रेषण तिथि: (i) 1-2 चालू माह (ii) 16-17 चालू माह
डाकघर: लोदी रोड एचओ., नई दिल्ली **"रजिस्टर्ड"**
52 पृष्ठ कवर सहित

आर.एन.आई. DELHIN/2006/16953
डी.एल. (एस)-17/3264/2018-20
Licence to Post without Prepayment
Licence No. U(S)-41/2018-19

मोदी सरकार 2.0 की पहली कैबिनेट बैठक

वादे जो किए गए

देश के सभी किसानों को पीएम किसान का लाभ मिले इसके लिए योजना के कवरेज का विस्तार करेंगे

टीकाकरण का विस्तार करेंगे और पशुओं में होने वाले फुट एंड माउथ रोग और ब्रुसेलोसिस को खत्म करेंगे

देश के सभी छोटे और सीमांत किसानों के लिए पेंशन योजना शुरू करेंगे

सभी छोटे दुकानदारों को कवर करने के लिए पेंशन योजना शुरू करेंगे

बीजेपी मेनिफेस्टो,
8 अप्रैल 2019

वादे जो पूरे हुए

सभी किसानों को पीएम किसान का लाभ मिले इसके लिए योजना का विस्तार किया गया, अब 14.5 करोड़ किसानों को मिलेगा लाभ

आने वाले 5 वर्षों में पशुओं में होने वाले फुट एंड माउथ रोग और ब्रुसेलोसिस को खत्म करने के लिए विशेष योजना शुरू की गई

छोटे और सीमांत किसानों के लिए सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए योजना शुरू की गई

1.5 करोड़ रुपये से कम के टर्नओवर वाले सभी छोटे दुकानदारों और व्यापारियों को कवर करने के लिए योजना शुरू की गई, लगभग 3 करोड़ लोगों को मिलेगा लाभ

पहली कैबिनेट बैठक,
31 मई 2019